खूबसूरत शताब्दी बदसूरत लोग

श्याम मोहन अस्थाना



खूबसूरत शताब्दी : बदसूरत लोग • श्याम मोहन अस्थाना

खूबसूरत शताब्दी : बदसूरत लोग

खूबसूरत शताब्दी
बदसूरत लोग

श्याम मोहन अस्थाना

अभिव्यक्ति प्रकाशन

दिल्ली-110032

ISBN 81–85255-20-2

मूल्य : 100 रुपये

© श्याम मोहन अस्थाना

प्रथम संस्करण : 2005

प्रकाशक

अभिव्यक्ति प्रकाशन

29/61, गली नं॰ 11, विश्वास नगर,

दिल्ली-110032

फोन : 22301432

मुद्रक : शेफाली लेज़र टाइपसैटिंग द्वारा

नागरी प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

KHOOBSOORAT SHATABDI : BADSOORAT LOG (Play)

By Shyam Mohan Asthana

Price : Rs. 100.00

नाटक क्रम

खूबसूरत शताब्दी : बदसूरत लोग	7
कोयला भई न राख	27
मुर्दे नहीं बनना चाहते करोड़ पति	49
वापस नहीं लौटती नदी	61

खूबसूरत शताब्दी : बदसूरत लोग

पात्र

मनोहर—बैंक अधिकारी	35 वर्ष
मीना—मनोहर की पत्नी	30 वर्ष
मनोहर की मां	60 वर्ष
गनेश राव—प्राइवेट डिटेक्टिव	45 वर्ष
कमला—कोठे की मालकिन	60 वर्ष
मल्लिका—नर्तकी	28 वर्ष
रूपा—टी. वी. एनाऊंसर	24 वर्ष
लक्ष्मणन्—वैज्ञानिक	50 वर्ष
विसेंट जार्ज—सुरक्षा अधिकारी	45 वर्ष
हीरो—शंकर का सहायक	30 वर्ष
शंकर—वैज्ञानिक (नायक)	35 वर्ष

कथासार

एक वैज्ञानिक फंतासी (एकांकी) कथासार—शंकर एक वैज्ञानिक है। वह जींस पर शोध कर रहा है। उसकी धारणा है कि जींस को बदल कर मनुष्यों की अधिकांश बीमारियों का इलाज किया जा सकता है।

शंकर को शुरू में सफलता नहीं मिलती। पैसे की कमी से उसे अपार कष्ट होता है। उसकी पत्नी राधा सात दिनों तक निराहार रहने के बाद आत्महत्या कर लेती है।

पत्नी की मृत्यु से शंकर भयानक आक्रोश में भर जाता है। उसे अपने शोध में सफलता मिलती है। पर वह अब समाज की सेवा नहीं, विज्ञान के माध्यम से सत्ता पर कब्जा करना चाहता है।

उसकी पहली शिकार बनती हैं मीना—एक बैंक अधिकारी की पत्नी और मल्लिका—एक नर्तकी। शंकर ने उनका जींस बदल दिया था।

इन प्रयोगों से विश्व भर में हाहाकार मच जाता है। पर सुरक्षा के लोग शंकर का पता लगा लेते हैं। उसकी प्रयोगशाला नष्ट कर दी जाती है।

शंकर मीना की आत्मा लौटा देता है। पर मल्लिका फिर कोठे पर जाने के लिए तैयार नहीं है।

शंकर और मल्लिका विवाह-सूत्र में बंध जाते हैं।

—श्याम मोहन अस्थाना

पहला दृश्य

[**स्थान**–बैंक मैनेजर मनोहर का घर। **समय**–सुबह 8 बजे।]

(संगीत वादन)

[पत्नी मीना गुनगुना रही है।]

अंधेरिया है रात सजन रहियो कि जइहो।
सोने की थाली में जेवना परोसी।
जेवना मजेदार सजन खइहो कि जइहो।
अँधेरिया है रात सजन रहियो कि जइहो।

[पति मनोहर का प्रवेश]

मनोहर : मीना।

मीना : आओ मनोहर राजा!

मनोहर : मीना, तुम क्या गा रही थीं।

मीना : कल रेवड़ी तालाब में मेरा मुजरा है। उसी की तैयारी कर रही हूँ।

मनोहर : मीना, तुम एक बैंक मैनेजर की पत्नी हो। तुम्हें ऐसे चीप सौंग नहीं गाने चाहिए।

मीना : इन गानों में कोई बुराई नहीं है। लोग ऐसे ही गानों की फरमाइश करते हैं।

मनोहर : मीना, तुम यह क्या कह रही हो!

मीना : सुनो, मेरा नाम मीना नहीं मल्लिका है। मैं एक नर्तकी हूँ। दालमंडी में मेरा कोठा है।

मनोहर : नहीं-नहीं, यह सच नहीं है।

मीना : सुनो मनोहर राजा।

बेली : चमेली के सेजिया लगवनी, पलँग लचकदार सजन सोइहो कि जइहो। अंधेरिया है रात सजन, रहियो कि जइहो।

मीना : मनोहर राजा, बहुत जोर से नींद आ रही है।

मनोहर : मीना, लो यह दवा खा लो।

मीना : अरे मनोहर राजा, तुम्हारे हाथ से दवा क्या···जहर···भी खा···सकती हूँ।

[मीना गहरी नींद में सो जाती है]

मनोहर : अजीब बात है। बोलते-बोलते सो गयी। माँ **(थोड़ी देर बाद ज़ोर से)** माँ!

[माँ का प्रवेश]

माँ : क्या है लल्लू।

मनोहर : माँ, मीना की हालत बिगड़ती जा रही है। कुछ समझ में नहीं आता।

माँ : मैं गौरी ओझा के पास गयी थी। उनका कहना है कि आपकी बहू के शरीर में एक कोठे वाली का प्रेत घुस गया है। उसे निकालना होगा।

मनोहर : माँ, तंत्र-मंत्र की बात मेरी समझ में नहीं आती। वैसे मीना भी किसी कोठे वाले का नाम लेती है। कहती है कि मेरा नाम मीना नहीं, मल्लिका है। मेरा कोठा दालमंडी में है।

माँ : गौरी ओझा झाड़-फूंक के लिए तैयार हैं। करीब पाँच हजार का खर्च है।

मनोहर : माँ, तंत्र-मंत्र से कुछ नहीं होगा। डॉ. संपत ने मीना का जेनेटिक टेस्ट किया है। उनका कहना है कि मीना का जींस बदल दिया गया है।

माँ : यह काम कौन कर रहा है। कौन है हमारा दुश्मन। मीना जैसी अच्छी लड़की को बर्बाद कर उसे क्या मिलेगा?

मनोहर : माँ, लगता है कि मीना किसी साजिश की शिकार हो गयी है। मैंने प्राइवेट जासूस गनेश राव को बुलाया है। मीना की समस्या भूत-प्रेत की समस्या या मेडिकल प्राब्लेम नहीं है।

(कालबेल की आवाज़)

[गनेश राव का प्रवेश]

राव : गुड मार्निंग, मिस्टर वर्मा।

मनोहर : गुड मार्निंग, मिस्टर राव। हम आपके लिए बहुत बेचैनी से इंतजार कर रहे थे।

राव : मिस्टर वर्मा, आपकी वाइफ की बीमारी की पूरे शहर में चर्चा है। आई वुड लाइक टू नो द होल स्टोरी।

मनोहर : मिस्टर राव, यह सिर्फ बीमारी नहीं है। बहुत गंभीर बात है। माई वाइफ हैज़ लौस्ट हर सोल। कभी-कभी लगता है कि यह मेरी वाइफ नहीं है। कोई दूसरी औरत है।

राव : सब कुछ कहिये, मिस्टर वर्मा।

मनोहर : इस घटना की शुरुआत एक महीना पहले हुई। मेरी पत्नी रोज सुबह कंपनी बाग में टहलने जाती थी। उस दिन उसके लौटने में देर हुई। मैंने ख्याल नहीं किया। अचानक कुछ लोग मेरी वाइफ को औटो में लाद कर लाये। वह पूरी तरह बेहोश थी।

राव : उसके बाद!

मनोहर : कुछ देर बाद वह तेज बुखार में तपने लगी। तीन दिन बाद जब उसका बुखार उतरा तो वह सब कुछ भूल चुकी थी। मुझे, मेरी माँ को, अपने आपको भी।

राव : क्या उसकी स्मरण-शक्ति नष्ट हो गयी है?

मनोहर : उसकी स्मरण-शक्ति नहीं उसकी आत्मा बदल गयी है। उसके अनुसार वह मेरी पत्नी मीना नहीं, कोठे वाली मल्लिका है। वह मुझे एक ग्राहक समझती है। वह माँ से ऐसा व्यवहार करती है जैसे वह एक मेड-सरवेंट हो।

राव : आपने किसी डाक्टर को कंसल्ट नहीं किया।

मनोहर : किया है। सबसे पहले डॉ. देसाई ने जाँच की। उन्होंने मीना की बाहों में सूई का निशान देखा। पूछ रहे थे कि क्या मीना को खून चढ़ाया गया है! यह सूराख क्यों है!

राव : यह एक महत्त्वपूर्ण सवाल है।

मनोहर : डॉ. देसाई के सुझाव पर मैंने मनोचिकित्सक डॉ. फरेरा को कंसल्ट किया। उन्होंने मीना की पूरी केस हिस्ट्री समझ ली। पर वे किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सके।

राव : अजीब बात है।

मनोहर : मैं मुम्बई के जेनेटिक अस्पताल में डॉ. संपत से मिला। उन्होंने मीना का जैनिटिक टेस्ट किया। उनकी रिपोर्ट आश्चर्यजनक थी। उनके अनुसार मीना का जींस बदल दिया गया है। जींस बदलने से उसका सब कुछ बदल गया—उसका चेहरा, उसका स्वभाव—वह एक दूसरी औरत बन गयी है।

राव : पर यह सब किसने किया? उसका मोटिव क्या था?

मनोहर : इन सब बातों का पता लगाने के लिए मैं पुलिस कमिश्नर नाटेकर के पास गया। उन्होंने मेरी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। उन्होंने एफ. आई. आर. लिखने से भी इंकार कर दिया।

राव : मनोहर जी, क्या आप सोचते हैं कि इन घटनाओं के पीछे कोई साजिश है।

मनोहर : मेरा अनुमान यही है। कुछ लोगों का कहना है कि उस दिन दो लोगों ने बाग में घूमने वालों की हेपाटाइटिस-बी का इंजेक्शन लगाया था। पब्लिक ने उन्हें सरकारी कर्मचारी समझा। पर वे सरकारी कर्मचारी नहीं थे।

राव : कुछ गैर-सरकारी संस्थाएँ भी इस तरह का सोशल-वर्क करती हैं।

मनोहर : हाँ, ऐसा भी होता है।

राव : क्या उन लोगों की सूई के कारण मीना जी की ऐसी हालत हुई है।

मनोहर : मेरा यही ख्याल है।

राव : मनोहर जी, मीना जी को मामूली इंजेक्शन नहीं लगे थे। उनका खून बदला गया है।

मनोहर : मैं भी यही सोचता हूँ।

राव : क्या शहर में जींस-परिवर्तन के किसी और केस की जानकारी मिली है?

मनोहर : मुझे नहीं मालूम।

राव : मनोहर जी, सबसे पहले यह तय करना होगा कि यह एक मेडिकल केस है या इसके पीछे क्राइम और क्रिमिनल्स हैं।

मनोहर : यही बुनियादी सवाल है। ग्रेट डिटेक्टिव गनेश राव के लिए

यही चुनौती है।

राव : मनोहर जी, सूचनाएँ बहुत कम हैं। सब कुछ नानी की कहानी जैसा है। भूसे के ढेर में सूई को खोजना होगा। जो भी हो, मुझे यह चुनौती स्वीकार है।

दूसरा दृश्य

[**स्थान**–वही। **समय**–कुछ दिन बाद।]

[मीना गुनगुनाती है]

अटरिया पे चोर, भौजी दीया तो जलाओ)

मनोहर : मीना डीयर!

मीना : मनोहर राजा, तुमसे एक बात कहनी है।

मनोहर : बोलो डीयर!

मीना : मुझे दालमंडी, अपने कोठे पर पहुँचा दो।

मनोहर : क्यों, तुम्हें यहाँ क्या दिक्कत है?

मीना : बहुत दिक्कतें हैं। तुम्हारी मेड-सरवेंट का बर्ताव ठीक नहीं है। फिर मेरे ग्राहक यहाँ नहीं आते हैं।

मनोहर : मैं हूँ तुम्हारा ग्राहक–परमानेंट कस्टमर।

मीना : वहाँ बहुत लोग आते थे।

मनोहर : दालमंडी में तुम किसके साथ रहती थी।

मीना : क्यों, वहाँ मेरी मौसी हैं। दालमंडी की कमला बाई को सब जानते हैं।

(फोन की घंटी)

मनोहर : हलो।

(उधर से आवाज़) मैं बाग से गनेश राव बोल रहा हूँ।

मनोहर : बोलिये मिस्टर राव।

राव : मनोहर जी, मैंने बाग के सभी कर्मचारियों से बात की है। उस दिन कार्तिक स्नान का पर्व था। पार्क में लगभग बीस महिलाओं

का जमाव था। एक मेडिकल ग्रुप ने सबको हेपाटाइटिस-बी का इंजेक्शन लगाया था।

मनोहर : उन महिलाओं का नाम और पता मालूम हुआ?

राव : वे सब गाँव की औरतें थीं। उनका नाम या पता कोई नहीं जानता।

मनोहर : उस ग्रुप में शहर की महिलाएँ भी रही होंगी।

राव : कुछ लोगों का कहना है कि औरतों के समूह में दालमंडी की मल्लिका बाई भी थी। एक अफ़वाह है कि घर जाकर मल्लिका बाई बेहोश हो गयी थी।

मनोहर : मल्लिका बाई! इस मामले की जाँच करनी होगी। मुझे रोशनी दिखाई पड़ रही है।

राव : आपने मल्लिका बाई का नाम सुना है?

मनोहर : पहले नहीं सुना था। अब सुन रहा हूँ। मीना अब अपना नाम मल्लिका बाई बतलाती है।

राव : माई गौड, यह तो जबरदस्त सूचना है। कहीं मल्लिका की आत्मा ही मीना जी के अंदर प्रवेश तो नहीं कर गयी है।

मनोहर : ताज्जुब है। तांत्रिक गौरी ओझा भी यही कहता था।

राव : तांत्रिक के कहने से क्या होगा! इसके लिए सबूत चाहिए।

मनोहर : मीना एक कोठेवाली की तरह व्यवहार कर रही है।

राव : सब कुछ बहुत रहस्यपूर्ण लगता है। मैं मल्लिका से मिलने जा रहा हूँ।

तीसरा दृश्य

[**स्थान**–मल्लिका बाई का कोठा। **समय**–संध्या 6 बजे।]

[कमला बाई मल्लिका को पीट रही है। मल्लिका रो रही है।]

मल्लिका : **(रोते हुए)** नहीं, नहीं! बस करो मौसी! इतना मत मारो!

कमला : **(मारते हुए)** अभी क्या है। मैं तेरी जान ले लूँगी।

मल्लिका : नहीं मौसी, ईश्वर के नाम पर रहम करो।

कमला : हरामजादी, तेरी इतनी हिम्मत! मैं एक महीने से तेरा नखरा बरदाश्त कर रही हूँ। पहले बीमारी का बहाना था। अब तुझे क्या कहना है।

मल्लिका : मौसी, मैं अब भी बीमार हूँ। नाच-गाने से मुझे टेंशन होता है।

कमला : यह टेंशन क्या होता है। हरामखोर, हमसे अंग्रेजी बोलती है। तू नाच-गाना बंद कर देगी तो यह कोठा कैसे चलेगा।

मल्लिका : मौसी, नाच-गाने के लिए दूसरी लड़कियाँ हैं। इस बीमारी ने मुझे बिलकुल बदल दिया है। मैं इस पेशे को छोड़ देना चाहती हूँ।

कमला : यह नामुमकिन है। मैं तुझे घर से उठा कर लायी थी। तेरी शिक्षा दीक्षा में मैंने लाखों खर्च किया है। अब तू साली लेक्चर दे रही है।

मल्लिका : मौसी, मुझे भी अपनी मर्जी से जीने का हक है।

कमला : यह जीने का हक क्या होता है। इस कोठे की अपनी शान है। पूरा मार्केट हमसे रश्क करता है।

मल्लिका : मौसी, सिर्फ टीम-टाम से क्या होता है। जिन्दगी का कुछ मक्सद होना चाहिए।

कमला : जिन्दगी का मक्सद! बहुत बड़ी-बड़ी बातें करने लगी है। सत्तर चूहे खाकर बिल्ली चली हज़ करने। चल जल्दी तैयार हो जा।

मल्लिका : मौसी, मुझ पर दया करो। मुझे मजबूर मत करो।

कमला : कोई चारा नहीं है। एक नया गाहक आया है। नाम है गनेश राव। तेरे मुजरे और सजरे के लिए मैंने पाँच हजार का ब्याना लिया है।

मल्लिका : ठीक है मौसी। मैं मुजरा कर लूँगी। पर शरीर का सौदा नहीं करूँगी।

कमला : तूने परेशान कर दिया। उनसे कह कर देखती हूँ।

[गनेश राव का प्रवेश]

राव : क्या हुआ मैडम? लगता है कि मल्लिका जी को मेरी शक्ल से नफरत है।

कमला : नहीं ऐसी कोई बात नहीं है। लड़की लम्बी बीमारी से उठी है।

मुजरे के लिए तैयार है। इससे ज्यादा संभव नहीं है।

राव : कोई बात नहीं। पर बीमारी क्या थी?

कमला : सुबह टहलने गयी थी। वहाँ किसी ने एक इंजेक्शन दे दिया। उस इंजेक्शन से इसकी यह दुर्दशा हो गयी।

राव : माई गौड, समझिये कि जान बच गयी।

कमला : मैं आपके लिए चाय लाती हूँ। तब तक मल्लिका संगीत से आपका मनोरंजन करेगी।

[कमला का प्रस्थान]

मल्लिका : गनेश जी, आपको भजन पसंद है।

राव : हाँ-हाँ, क्यों नहीं।

मल्लिका : कबीर का भजन गाती हूँ।

(गीत) कौन ठगवा नगरिया लूटल हो।
चंदन काठ के बनल खटोला,
तापर दुलहिन सूतल हो।
कौन ठगवा नगरिया लूटल हो।

[कमला का प्रवेश]

कमला : क्यूँ री चुड़ैल, तुझे मुजरा करना था। तूने कहाँ का मुर्सिया शुरू कर दिया।

राव : कोई बात नहीं। इन्हें गाने दीजिये।

कमला : यह कमला बाई का कोठा है। यहाँ लोग भजन-कीर्तन के लिए नहीं, दिल बहलाने के लिए आते हैं।

(संगीत वादन)

चौथा दृश्य

[**स्थान**–मनोहर वर्मा का मकान। **समय**–संध्या 6 बजे।]

[गनेश राव का प्रवेश]

राव : मनोहर जी, मैं मल्लिका से मिला। उसके मुहल्ले में भी लोगों

से वातचीत की। पार्क के इंजेक्शन के वाद मल्लिका विलकुल वदल गयी है। मौसी ने कहा कि मारपीट के वाद भी वह मुजरा-सजरा के लिए तैयार नहीं होती। वह एक नयी भापा वोलने लगी है।

मनोहर : यहाँ विलकुल उलटा मामला है। मीना एक अनुभवी कोठेवाली की तरह व्यवहार कर रही है।

राव : लगता है कि इन लड़कियों का जींस बदल दिया गया है। पर इसके साथ सैकड़ों सवाल पैदा होते हैं।

मनोहर : हाँ, एक नयी खबर। हमारे बैंक की शाखाएँ गाँव में भी हैं। उन गाँवों में अनेकों औरतें अचानक पागल हो गयी हैं। लोग झाड़-फूँक करा रहे हैं।

राव : संभव है कि ये औरतें वही हो जिन्हें पार्क में इंजेक्शन दिया गया था।

मनोहर : क्या कहूँ, कुछ समझ में नहीं आता।

राव : मेरे ख्याल में यह एक वैज्ञानिक समस्या है। मैंने प्रमुख वैज्ञानिक के लक्ष्मणन से भी संपर्क किया। उनसे सब कुछ कहा। पर उन्होंने मुँह बन्द कर लिया। बोले कि जींस परिवर्तन पर विश्व भर में शोध हो रहा है। इस देश में जींस परिवर्तन हुआ है, विश्वास नहीं होता।

मनोहर : राव जी, दूरदर्शन का एक विज्ञान चैनल है। वह विज्ञान के बारे में लेटेस्ट सूचनाएँ देता है।

राव : हाँ, मैंने वह चैनल देखा है। टी. वी. पर वह चैनल लगाता हूँ। **(टी. वी. चैनल चलता है)**

रूपा : यह दूरदर्शन का विज्ञान चैनल है। मैं रूपा सोनी विज्ञान समाचार प्रस्तुत कर रही हूँ। सुबह के समाचार में मुम्बई के समुद्र-तट पर दो लाशों की सूचना दी गयी थी। उन लाशों का पोस्ट-मार्टम सरकारी अस्पताल में किया गया। उन लाशों का कद आठ-आठ फुट पाया गया।

दूसरा समाचार अधिक रहस्यपूर्ण है। मुम्बई के पास समुद्र-तट पर आठ बच्चों के शव मिले हैं। उन सभी बच्चों का

कद, सूरत, शक्ल एक जैसी है। विज्ञान की भाषा में उन्हें क्लोनस् कहा जा सकता है।

कुछ लोगों का कहना है कि ये सब जींस परिवर्तन के प्रयत्न हैं।

[स्क्रीन पर जार्ज का प्रवेश]

रूपा : गुड इवनिंग, मिस्टर जार्ज।

जार्ज : गुड इवनिंग, मिस रूपा।

रूपा : मिस्टर जार्ज, आपने समुद्र तट पर दो सुपरमैन और आठ बच्चों के क्लोनस् की बात सुनी होगी। आपकी पहली प्रतिक्रिया क्या है?

जार्ज : लगता है कि इस देश में जींस बदलने का फार्मूला मिल गया है। यह बहुत खतरनाक बात है।

रूपा : इसके क्या-क्या परिणाम हो सकते हैं?

जार्ज : यह एक डेंजर सिग्नल है। इस तरह पूरी फौज खड़ी की जा सकती है। उसे रिमोट से कंट्रोल किया जा सकता है। हमें देश की सुरक्षा के बारे में नये तरह से सोचना होगा।

रूपा : मिस्टर जार्ज, इस योजना के पीछे कौन लोग हैं?

जार्ज : अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। हम जल्दी ही पता लगा लेंगे।

[संगीत वादन]

पाँचवाँ दृश्य

[**स्थान**–शंकर तांडव की प्रयोगशाला। **समय**–सुबह 8 बजे।]

[प्रयोग सहायक महाकाल का प्रवेश]

महाकाल : बॉस!

शंकर : आओ महाकाल, क्या खबर है?

महाकाल : बॉस, खबर ठीक नहीं है। हमने सुपरमैन और क्लोनस् के

शवों को गहरे समुद्र में फेंका था। पर लहरों ने उन्हें वापस तट पर लौटा दिया। उन्हें लाखों लोगों ने देखा। आज देश-विदेश की मीडिया में यही टॉप न्यूज़ है।

शंकर : इससे क्या फर्क पड़ता है।

महाकाल : बॉस इससे फर्क पड़ता है। मैंने सड़क पर लोगों को बातचीत करते सुना है। सबका विचार है कि सुपरमैन या क्लोनस् से देश को बड़ा खतरा है।

शंकर : सरकार की प्रतिक्रिया आई है?

महाकाल : टी. वी. के अनुसार प्रधानमंत्री ने रक्षा-सचिव से सवाल पूछे हैं। रक्षा सचिव ने वैज्ञानिकों का सम्मेलन बुलाया है।

शंकर : हमें कोई खतरा नहीं है। रक्षा-विभाग के लोग यहाँ तक नहीं पहुँच सकते।

महाकाल : यह नहीं कहा जा सकता। कुछ देर पहले एक पुलिस अफसर आया था। तरह-तरह के सवाल पूछ रहा था। हमने कह दिया कि हम गरम मसाला बेचते हैं। उसे मसाले का एक पैकेट दे दिया।

शंकर : चिंता करने की बात नहीं है। हमारा प्रोजेक्ट तैयार है। साल-भर के बाद हमारे पास एक लाख रोबोट हो जायेंगे। वे रिमोट से संचालित होंगे। दुनिया की कोई भी फौज उनका मुकाबला नहीं कर सकेगी।

महाकाल : बॉस इस प्रोजेक्ट का लक्ष्य क्या है?

शंकर : पहले हम इस देश पर विजय प्राप्त करेंगे। उसके बाद विश्व विजय की योजना है। यह इतिहास की सबसे बड़ी लड़ाई होगी। विज्ञान पर आधारित सभ्यता अपने चरम बिन्दु पर पहुँच जाएगी।

महाकाल : बॉस, आपका पहला प्रोजेक्ट था, जींस परिवर्तन के द्वारा बीमारियों का इलाज। कुछ दिनों के बाद आपका विचार बदल गया। आपने ब्लड-ट्रांसफ्यूजन के द्वारा आत्मा बदलने का प्रयोग किया। इसमें भी आपको बड़ी सफलता मिली। पर मीना और मल्लिका का जीवन नष्ट हो गया।

शंकर : महाकाल, तुम यह सब क्या कह रहे हो।

महाकाल : आपने सुपरमैन और क्लोनस् का प्रोजेक्ट शुरू किया। उसमें भी आपको बड़ी सफलता मिली। अब आप रोबोट के द्वारा विश्व विजय का सपना देख रहे हैं। यह बहुत खतरनाक विचार है।

शंकर : महाकाल, विज्ञान ने मेरे हाथों में इतनी शक्तियाँ दी हैं जितनी इतिहास में किसी को नहीं मिली। मैं अब उनका प्रयोग करना चाहता हूँ।

महाकाल : बॉस, पता नहीं कि विश्व विजय संभव है या नहीं। अगर यह संभव भी है तो यह विज्ञान का सबसे बड़ा दुरुपयोग होगा।

शंकर : महाकाल, मैंने अपने जीवन में कुछ सपने देखे थे। मैं सबसे पहले समाज के बारे में सोचता था। पर लोगों ने मेरे सभी सपनों को कुचल दिया।

महाकाल : बॉस, सपनों का मरना बहुत दुखदायी होता है।

शंकर : मेरी आत्मा में सैकड़ों काँटे चुभे हुए हैं। मैंने सोचा था कि जींस को बदल कर पूरी मानवता को रोगमुक्त कर दूँगा। मेरे पास शोध के साधन नहीं थे। फिर भी मैं भूख-प्यास की परवाह किये बिना मैं काम में जुटा रहता था। मेरी पत्नी राधा में बड़ा धैर्य था। पर धीरे-धीरे उसकी हँसी सूख गयी। सात दिनों तक निराहार रहने के बाद उसने आत्महत्या कर ली। मैं उस दिन फूट-फूट कर रोया था।

महाकाल : बॉस, बड़ी करुण कहानी है।

शंकर : जब दुख का ताप कम हुआ तो मेरे मन में प्रतिशोध की आग सुलगने लगी। मैं समाज से बदला लूँगा। मैं पूरे समाज, पूरी राजनीतिक व्यवस्था को नष्ट कर दूँगा।

मैंने सबसे पहले अपना नाम बदला। मैं शंकर तांडव से शंबर क्रूर बना। शंबर एक अनार्य राजा था। उसने सभी आर्य राजाओं से भयानक युद्ध किया था।

मैंने अपना प्रोजेक्ट भी बदला। मैंने मीना और मल्लिका के सुखी जीवन को नष्ट किया। अब मैं विज्ञान के प्रयोग से

पूरे समाज को नष्ट कर देना चाहता हूँ।

महाकाल : बॉस, कुछ लोगों के कसूर के कारण सबको सजा नहीं दी जा सकती।

शंकर : मैं इस समाज को नष्ट कर नया समाज बनाना चाहता हूँ। नयी व्यवस्था में बीमारी नहीं होगी। अन्याय और अत्याचार नहीं होगा। राधा भूख से नहीं मरेगी।

महाकाल : बॉस, विज्ञान ऐसे स्वर्ग का निर्माण नहीं कर सकता। पिछली शताब्दियों में जितनी लड़ाईयाँ हुई हैं उनमें विज्ञान का दुरुपयोग ही हुआ है।

शंकर : कोई लड़ाई नहीं होगी। बड़ी-से-बड़ी सेना भी रोबोट ब्रिगेड के आगे नहीं टिक सकती।

(संगीन वादन)

छठा दृश्य

[**स्थान**–वही। **समय**–दो दिन बाद।]

[मल्लिका का प्रवेश]

मल्लिका : शंकर, ग्रेट साइंटिस्ट, मुझे दो मिनट का समय दो।

शंकर : मल्लिका, तुम मुझे मुजरिम समझती हो। दो मिनट में तुम्हारी शिकायतें पूरी नहीं होंगी।

मल्लिका : मैं शिकायत करने नहीं आयी हूँ। मैं तुमको धन्यवाद देने आयी हूँ।

शंकर : मल्लिका व्यंग कर रही हो। खुल कर गालियाँ क्यों नहीं देतीं।

मल्लिका : शंकर, तुममें अपार प्रतिभा है। पर तुम दुख को सहन नहीं कर सके। शिखर पर चढ़ने वाले यात्री को ठोकर से नहीं डरना चाहिए।

शंकर : मल्लिका, तुम्हें शिकायत हो सकती है। पर मेरा भी एक हिसाब था। मैंने उसे ही चुकता किया है।

मल्लिका : तुम्हारा हिसाब-किताब! मैं कुछ समझ नहीं सकी।

शंकर : मल्लिका, राधा की मृत्यु के बाद मैं बुरी तरह से टूट गया था। मुझे सहारे की जरूरत थी। मैंने जहाँ भी दस्तक दी, मुझे निराशा ही मिली। मैं तुम्हारे कोठे पर भी गया। वहाँ भी मेरे लिए कोई जगह नहीं थी। तुम्हारी मौसी ने मुझे अपमानित कर निकाल दिया।

मल्लिका : शंकर, दालमंडी के कोठे पर मेरी नहीं, मौसी की हुकूमत है। उस दुनिया के सारे नियम मौसी ही बनाती है। मेरी कोई हैसियत नहीं है—कभी नहीं रही। शंकर, मैंने सुना है कि वैज्ञानिक चूहों, मेढ़कों या खरगोशों पर शोध करते हैं। तुमने भोली-भाली लड़कियों पर शोध किया। उनका जीवन नष्ट हो गया। क्या तुम्हें इस बात का दुख है।

शंकर : मल्लिका, जींस परिवर्तन से तुम्हारी दुनिया बदल गयी है। तुम्हें किस बात की परेशानी है।

मल्लिका : इस बदलाव से मौसी बहुत दुखी हैं। अगर यही स्थिति रही तो वे मुझे कोठे से निकाल देंगी। मैं एक चौराहे पर खड़ी हो गयी हूँ।

शंकर : मल्लिका, कुछ और कहना है।

मल्लिका : शंकर, तुम विज्ञान से क्या कर रहे हो मेरी समझ से बाहर है। पर लगता है कि तुम पूरी व्यवस्था में हस्तक्षेप कर रहे हो। तुमने बहुत से दुश्मन खड़े कर लिए हैं।

शंकर : मुझे किसका डर है। विज्ञान ने मेरे कद को बहुत बढ़ा दिया है।

मल्लिका : शंकर, मीडिया में तुम एक विलेन के रूप में पेश किये जा रहे हो।

शंकर : मैं मीडिया की परवाह नहीं करता। वे सिर्फ भौंक सकते हैं, काट नहीं सकते।

मल्लिका : शंकर, वैज्ञानिकों की कई टोलियाँ तुम्हारे बारे में सूचनाएँ एकत्र कर रही हैं।

शंकर : यह तो खुशी की बात है।

मल्लिका : सुरक्षा अधिकारी तुम्हारे चारों ओर घेरा बना रहे हैं। यह घेरा अब कसता जा रहा है।

शंकर : मल्लिका, यह क्या कह रही हो!

मल्लिका : वैज्ञानिकों की कई टोलियाँ मेरे पास आई थीं। उनके साथ सुरक्षा के लोग थे।

शंकर : मल्लिका, मैं चूहों से नहीं डरता। मेरे पास अपार शक्तियाँ हैं। मैं अब उनका उपयोग करने जा रहा हूँ।

मल्लिका : शंकर, तुम दुनिया बदलना चाहते थे। इसके लिए लोगों की सहमति जरूरी है।

शंकर : में जो कुछ कर रहा हूँ वह सबके लाभ के लिए है। इस बात पर विवाद नहीं हो सकता।

मल्लिका : शंकर, तुमने एक आंधी को जन्म दिया है। चारों तरफ धूल उड़ रही है। कल चट्टानें टूट-टूट कर गिरेंगी।

शंकर : यह सब परिवर्तन की पीड़ा है। मैंने पूरी योजना बना ली है। दस देशों में रोबोट सेना तैयार हो रही है। इस महायुद्ध को अब नहीं रोका जा सकता।

[रक्षा सचिव जार्ज और वैज्ञानिक लक्ष्मणन् का प्रवेश]

जार्ज : मिस्टर शंकर, मैं हूँ विसेंट जार्ज, रक्षा सचिव और ये है मिस्टर लक्ष्मणन् टाप-साइंटिस्ट।

शंकर : मैं आप लोगों के लिए क्या कर सकता हूँ?

जार्ज : मिस्टर शंकर, प्रतिभा बहुत अच्छी और ऊँची चीज़ होती है। पर अगर प्रतिभा के साथ पागलपन जुड़ जाये तो समाज के लिए खतरा पैदा हो जाता है।

शंकर : मिस्टर जार्ज, आप क्या कहना चाहते हैं?

जार्ज : मिस्टर शंकर आपकी गतिविधियाँ समाज विरोधी हो रही हैं। कोई भी व्यवस्था इस पागलपन को बरदाश्त नहीं कर सकती।

शंकर : आप लोग इस व्यवस्था के संरक्षक हैं। मैं इस समाज को बदलना चाहता हूँ। हमारा-आपका विरोध स्वाभाविक है।

जार्ज : आपने शायद संसद की बहस को नहीं सुना। पूरे हाउस ने आपकी गतिविधियों की कड़ी आलोचना की है। हम कार्यवाही करने को बाध्य हो गये हैं।

शंकर : संसद पूरी बात नहीं जानती। आपकी कार्यवाही से मुझे क्या हो सकता है। मेरे पास पुश-बटन राकेट्स् हैं। इस शक्ति के

सामने आपकी धमकी का कोई मूल्य नहीं है।

जार्ज : मिस्टर शंकर, आप बहुत बड़ी-बड़ी बात बोल रहे हैं। अब मैं सरकारी निर्णय सूचित कर रहा हूँ। आपको सरेंडर करने के लिए हफ्ते-भर का समय दिया जा रहा है।

शंकर : मिस्टर जार्ज मुझे आपका आदेश मान्य नहीं है।

जार्ज : तब हम आपको अरेस्ट करने के लिए बाध्य हैं।

शंकर : मिस्टर जार्ज, आप मेरी रोबोट सेना के सामने खड़े नहीं हो सकेंगे।

जार्ज : मिस्टर शंकर आपकी प्रयोगशाला की बिजली काट दी गयी है। आपके सभी कम्प्यूटरों में वायरस घुस चुका है। आपके रोबोट अब खिलौने से अधिक कुछ नहीं हैं।

शंकर : माई गौड, यह आप क्या कह रहे हैं। अगर यह सच है तो आपने इस शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धियों को नष्ट कर दिया है। इतिहास आपको कभी माफ नहीं करेगा।

लक्ष्मणन् : मिस्टर शंकर, मैं हूँ लक्ष्मणन्, विज्ञान समिति का अध्यक्ष। आपकी प्रयोगशाला सचमुच नष्ट कर दी गयी है।

शंकर : मिस्टर लक्ष्मणन्, यह सब कुछ बहुत भयानक है। मेरी जीवन भर की कमाई नष्ट हो गयी। अब मैं जीकर क्या करूँगा।

लक्ष्मणन् : मिस्टर शंकर, आपके प्रयोग खतरनाक थे। उनका दुरप्रयोग और भी खतरनाक था। यह खूबसूरत दुनिया जल कर राख हो जाती।

शंकर : मिस्टर लक्ष्मणन्, मैं इस बदसूरत दुनिया को नष्ट कर एक खूबसूरत दुनिया बनाना चाहता था।

लक्ष्मणन् : मिस्टर शंकर, एक खूबसूरत दुनिया बनाने के लिए एक पवित्र संकल्प चाहिए। एक पारिवारिक दुख ने आपको बहुत तनाव से भर दिया है।

शंकर : मेरा सब कुछ नष्ट हो गया। मेरे सभी सपने धूल में लोट रहे हैं।

लक्ष्मणन् : मिस्टर शंकर, हम तुम्हारा सम्मान करते हैं। तुम एक महान वैज्ञानिक हो। हमने तुम्हारा नाम विश्व के सबसे बड़े वैज्ञानिक पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया है।

शंकर : मुझे इन पुरस्कारों में कोई दिलचस्पी नहीं है। मेरे सामने अब कोई लक्ष्य नहीं है। सब कुछ खत्म हो गया है।

[गनेश राव और मीना का प्रवेश]

गनेश : मिस्टर शंकर, मैं हूँ गनेश राव, एक प्राइवेट डिटेक्टिव। तुमने मनुष्य के जींस को पहचाना था। मैंने तुम्हारे जींस का विश्लेषण किया है। तुम्हारे अंदर बैठे देवता और दानव को उजागर किया है।

लक्ष्मणन् : हाँ, मिस्टर शंकर गनेश राव की मेहनत के बिना समस्या का समाधान नहीं मिलता।

गनेश : शंकर बाबू, अभी सभी समस्याओं का समाधान नहीं हुआ है। मैं मीना को साथ लाया हूँ। मीना के अंदर आज भी कोठेवाली बैठी है। वह रोज-रोज नया नाटक करती है।

लक्ष्मणन् : मिस्टर राव, सिर्फ मीना की समस्या नहीं है। दालमंडी की मल्लिका वैसी ही दुखी हैं। गाँव की औरतें भी जींस परिवर्तन से पागल हो गयी हैं।

गनेश : मिस्टर शंकर, भोली-भाली लड़कियों को शोध का विषय बनाना बहुत ही गलत था। इस काम के लिए आपको माफ नहीं किया जा सकता।

जार्ज : हमने मिस्टर शंकर को दंड देने की व्यवस्था की है। उनके वैज्ञानिक शोधों पर मिलने वाले पुरस्कार को हम इन औरतों में बाँट देंगे। जिनका जींस बदला गया था।

शंकर : उन महिलाओं के लिए मुझे दुख है। मैं घोर आक्रोश में था। मुझे पुरस्कार के बँटवारे में कोई एतराज नहीं है।

गनेश : सबसे बड़ी बात यह है कि उन महिलाओं का इलाज किया जाय।

शंकर : यह काम बहुत मुश्किल नहीं है। जिस रसायन से जींस का परिवर्तन हुआ था उसी के डबल डोज़ से जींस की वापसी हो सकती है।

गनेश : शंकर, मेरे साथ मीना जी आई हैं। मल्लिका जी भी मौजूद हैं। यह काम आज ही संपन्न होना चाहिए।

शंकर : मिस्टर राव, मैंने वादा किया है। पर आज मेरा सहायक

उपस्थित नहीं है। यह काम कल संपन्न हो जाएगा।

गनेश : ओ. के. मिस्टर शंकर, मीट यू टूमारो।

[गनेश, जार्ज, लक्ष्मणन् का प्रस्थान]

शंकर : मल्लिका, सब लोग चले गये। कल सभी महिलाएँ अपनी-अपनी दुनिया में वापस लौट जायेंगी। लेकिन मेरी दुनिया नष्ट हो गयी। मैं एक पागल हत्यारे की तरह खदेड़ दिया गया हूँ।

मल्लिका : शंकर, सब कुछ खत्म नही हुआ है। कुछ वैज्ञानिक पत्रिकाओं ने तुम्हारे प्रयोगों पर सुन्दर लेख लिखे हैं।

शंकर : इन बातों का कोई अर्थ नहीं है। लगता है कि मुझे नये सिरे से जिन्दगी शुरू करनी होगी।

मल्लिका : शंकर, तुमको मेरे भविष्य के बारे में भी सोचना है।

शंकर : तुम्हें क्या दिक्कत है। जींस की वापसी के बाद तुम्हें मिल जाएगा दालमंडी का कोठा। तुम्हारी मौसी तुम्हें खुशी से स्वीकार कर लेंगी।

मल्लिका : शंकर, दालमंडी के कोठे की बात मत करो। वह बहुत पीछे छूट गया है। मैं वहाँ वापस नहीं जा सकती—जाना भी नहीं चाहती।

शंकर : मल्लिका, जींस की वापसी के बाद तुम्हें वही मिलेगा जो तुम्हारा था। दूसरा कोई विकल्प नहीं है।

मल्लिका : शंकर, एक इतिहास मर चुका है। एक नयी मल्लिका जन्म ले चुकी है। तुम्हारे सारे रसायन कोठे की मल्लिका को वापस नहीं ला सकते।

शंकर : मल्लिका तुम्हारी जिन्दगी में, मैं और हस्तक्षेप नहीं करना चाहता।

मल्लिका : शंकर, हम दोनों एक ही नाव पर सफर कर रहे हैं। मुझे भी सहारे की जरूरत है। मैं राधा न बन सकूँ पर तुम्हारी छाया बन कर जी सकती हूँ।

शंकर : ठीक है मल्लिका। मुझे भी सहारे की जरूरत है। मुझे तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार है।

(संगीत वादन)

कोयला भई न राख

(एक मनोवैज्ञानिक रेडियो एकांकी)

पात्र

जज
सरकारी वकील
रंजन-पति
राजी-नायिका
मल्होत्रा
साहनी
सिपाही

कथासार

राजी पर अपने पति रंजन की हत्या का अभियोग है। राजी इस इल्ज़ाम को स्वीकार कर लेती है। वह अपनी सफाई में कुछ कहना नहीं चाहती है। सरकारी वकील के आक्षेप पर राजी, हत्या की सत्य-कथा' कहने को तैयार होती है। प्रश्न यह है कि राजी, अपने पति को बेहद प्यार करती थी। पति की खातिर वह अपने चरित्र के साथ समझौता भी कर लेती है। फिर राजी पति की हत्यारिणी क्यों बन गयी।

राजी—धूप से भरे आँगन में अँधेरे के खंड थे। धीरे-धीरे अँधेरा जीवन की पूरी हँसी-खुशी को निगल गया।

पहला दृश्य

[**स्थान**–सेशन कोर्ट। **समय**–दिन के 11 बजे।]

स. वकील : योर ऑनर!

प्रस्तुत केस सरकार बनाम राजी शर्मा एक निर्मम हत्या का मुकदमा है। पिछले साल बीस अप्रैल को राजी शर्मा ने अपने पति रंजन शर्मा की हत्या कर दी। मुजरिमा ने इस काम के लिए पति के ही रिवाल्वर का प्रयोग किया। गोली सीने में लगी और रंजन शर्मा की तत्काल मृत्यु हो गयी।

मुजरिमा राजी शर्मा ने पुलिस के सामने अपने जुर्म को कबूल कर लिया है। इससे अभियान पक्ष का काम बहुत आसान हो गया है।

जज : मिसेज़ राजी शर्मा, तुम्हारे ऊपर पति रंजन शर्मा की हत्या का अभियोग है। तुम्हें अपनी सफाई में क्या कहना है।

राजी : **(कहरते हुए)** जज साहब, मैंने रंजन की हत्या की है। आप मुझे कठोरतम दंड दीजिए। मुझे अपनी सफाई में कुछ नहीं कहना है।

स. वकील : योर ऑनर, मुजरिमा के बयान से जुर्म पर रोशनी पड़ती है। पर यह बयान अधूरा है। जब कोई औरत अपने शौहर का खून करती है तो पहला सवाल यह उभरता है–क्यों! पत्नी ने ऐसा क्यों किया? इस जुर्म का दूसरा सवाल यह है कि वे लोग कौन थे जिन्होंने हत्या की प्रेरणा दी। एक तीसरा सवाल है कि मुजरिमा के साथ उनके तालुक्कात क्या थे?

राजी : ये सारे सवाल बिलकुल अनर्गल हैं। मैंने अपने पति की हत्या की है। इस घटना की पूरी जिम्मेदारी मेरे ऊपर है।

स. वकील : योर ऑनर! मुजरिमा ने जुर्म कबूल कर पूरी सच्चाई पर पर्दा

डालने की कोशिश की है।

सब जानते हैं कि रंजन शर्मा एक नव-धनाढ्य था। झोंपड़ी से महल की यात्रा उसने कम-से-कम समय में पूरी की है। इस सम्पन्नता की धूप में मुजरिमा ने अधिक-से-अधिक सुख बटोरा है। लोगों का कहना है कि राजी शर्मा रोज शराब और साथी बदलती रही है।

राजी : यह झूठ है। बहुत बड़ा झूठ है।

स. वकील : योर ऑनर, राजी शर्मा ने सच बोलने की शपथ ली है। अदालत जानना चाहती है कि इस जुर्म में दूसरे कौन लोग शामिल थे। वे कौन से यार थे, यारों के यार थे जिनको खुश करने के लिए उन्होंने अपने ही घर में आग लगा ली!

जज : मिसेज़ शर्मा, आपने जितना कुछ कहा है, काबिले तारीफ है। पर बहुत कुछ अनकहा रह गया है। हम आपसे पूरा सच चाहते हैं।

राजी : पूरा सच क्या होता है। पूरा सच कहीं नहीं होता। सब झूठ की जिन्दगी जी रहे हैं।

मैं जीवन-भर नागफनी के जंगल में भटकती रही हूँ। एक नरक के बाद दूसरा नरक। सबने स्वर्ग का वादा किया। पर वह स्वर्ग भी झूठ था। वह सिर्फ एक बड़ा नरक था।

जज : मिसेज़ शर्मा, मैं आपका बयान गौर से सुन रहा हूँ।

राजी : मैं अपने माता-पिता की इकलौती संतान थी। पिता बहुत कम उम्र में ही चले गये। उनकी मृत्यु से हम पूरी तरह निराधार हो गये। पर माँ में वज्र-सा संकल्प था। जिस घर में न दीवारें हों, न छत, वहाँ माँ ने अपना आँचल तान दिया।

पर उम्र के साथ हमारी समस्याएँ बढ़ती गयीं। लोगों के अनुसार मैं देखने में बहुत सुन्दर थी। इससे अनेक समस्याएँ पैदा हो रही थीं। नगर में लूट, अपहरण, बलात्कार की घटनाएँ बढ़ती जा रही थीं। माँ परेशान थीं। मैं बेहद भयभीत माँ के आफिस जाने के बाद मैं दरवाजा बंद कर लेती थी। हरेक आहट पर थर-थर काँपती थी।

एक दिन माँ अपने साथ एक दुबले-पतले लड़के को लेकर आयी। साँवला रंग, खुरदुरा चेहरा और आँखों में कांइयापन। माँ ने बतलाया कि रंजन एक स्थानीय फैक्टरी में किसनी है। रंजन ने शीघ्र ही अपनी स्वीकृति दे दी। मुझे यह रिश्ता बिलकुल नापसंद था पर मां की सीमाओं पर विचारकर मैंने विरोध नहीं किया।

रंजन गहरी हीन-भावना का शिकार था। वह मुझे एक रंगीन खिलौना समझता था। फैक्टरी के लोगों को बुलाकर वह समय असमय मेरा प्रदर्शन करता रहता था। एक दिन मेरे विरोध पर वह बिलकुल उखड़ गया।

(फ्लैश-बैक)

रंजन : देखने में हसीन हो। अब तक कितने घाट का पानी पी चुकी हो।

राजी : रंजन, मैं गंगा हूँ। गंगोत्री से गंगा सागर तक जहाँ भी गयी हूँ, धरती को पवित्र करती गयी हूँ। खेतों को हरियाली से भरती गयी हूँ।

रंजन : अच्छा, तो तुम गंगा हो। सुनो मुझे गंगा-जमुना, सीता-सावित्री का मॉडल नहीं चाहिए। बी प्रैक्टिकल! ऐसे ही लोग सफल होते हैं।

[पहले दृश्य की वापसी]

राजी : मुझे लगता था कि रंजन और मेरे बीच संवाद नहीं बन पाया है। मुझे बहुत जल्दी प्रैक्टिकल होने का अर्थ समझ में आ गया।

एक दिन ऑफिस से लौटने पर रंजन बहुत दुखी दिखाई पड़ा। उसके मुँह पर हवाइयाँ उड़ रही थीं।

(फ्लैश-बैक)

राजी : रंजन, बहुत बुझे-बुझे से लग रहे थे! तबियत ठीक है न?

रंजन : राजी, हम बर्बाद हो गए। बॉस ने मुझे नोटिस दे दिया।

राजी : कैसा नोटिस!

रंजन : राजी, मेरी सर्विस टेम्पोरेरी थी। आज बॉस ने मुझे एक महीने

का नोटिस देकर मेरा जॉब टर्मिनेट कर दिया।

राजी : रंजन, तुम्हारा बॉस पवन मल्होत्रा बहुत अच्छा आदमी है। एक दिन तुम्हारे जाने के बाद आया था। ख़ूब हँस-हँस कर बातें कर रहा था।

रंजन : मल्होत्रा लड़कियों के सामने बहुत शिष्ठ बन जाता है। पर यह उसका असली रूप नहीं है। वह बहुत बड़ा ब्लैकमेलर है। कुछ लोगों का कहना है कि वह जबर्दस्त वुमन-ईटर है—शहर का सबसे बड़ा नारी-भक्षक।

राजी : सुनो, तुमने बॉस से बात नहीं की।

रंजन : कोई फायदा नहीं है। वह बहुत बड़ा चीट है। उसने मुझसे नियुक्ति के लिए पंद्रह हजार रुपये लिए थे। सुनता हूँ कि अब उसने इस पोस्ट को पचास हजार में नीलाम किया है।

राजी : तब क्या हो सकता है?

रंजन : अगर कुछ नहीं हुआ तो हम बर्बाद हो जायेंगे। हमें यह क्वार्टर भी छोड़ देना होगा।

राजी : बहुत दुख की बात है।

रंजन : राजी, तुम सहयोग करो तो यह संकट टल सकता है।

राजी : मैं इसमें क्या कर सकती हूँ।

रंजन : तुम बहुत कुछ कर सकती हो। तुम्हारी पैरवी पर मल्होत्रा अपना निर्णय बदल सकता है।

राजी : रंजन, तुम यह क्या कह रहे हो? मैं मल्होत्रा को कितना जानती हूँ। सिर्फ 'हलो-हलो' का संबंध है।

रंजन : लोगों का कहना है कि मल्होत्रा स्त्रियों की उपस्थिति में बहुत सभ्य हो जाता है। यहाँ लोग पत्नियों के माध्यम से ही पैरवी करते हैं।

राजी : रंजन, यह क्या कह रहे हो। तुम्हीं ने कहा था कि मल्होत्रा जबर्दस्त वुमन-ईटर है। तुम जानबूझकर मुझे भेड़िये के सामने भेज रहे हो।

रंजन : मेरे खयाल में ऐसा कोई रिस्क नहीं है। आजकल उसकी पत्नी आई हुई है। पत्नी की उपस्थिति में वह मिसबिहेव नहीं

करेगा।

राजी : ठीक है। मैं जाती हूँ। मरता, क्या न करता। पर सफलता की बहुत उम्मीद नहीं है।

रंजन : ठीक है, मैं शाम को पहुँचा दूँगा।

[पहले दृश्य की वापसी]

राजी : मैं जब मल्होत्रा की कोठी पहुँची तो वह अकेले बैठ कर शराब पी रहा था। उसकी पत्नी का कहीं पता नहीं था।

(फ्लैश-बैक)

मल्होत्रा : आओ डीयर। कम इन।

राजी : गुड इवनिंग, सर।

मल्होत्रा : नो-नो, मुझे सर-वर मत कहो। मैं हूँ बस तुम्हारा ब्वाय-फ्रेंड।

राजी : यह कैसे हो सकता है।

मल्होत्रा : देखो डीयर, जिन्दगी बहुत खूबसूरत है। हमारे पास समय बहुत कम है।

राजी : मल्होत्रा जी, दरअसल मैं एक खास काम से आयी हूँ। मेरे पति रंजन को टर्मिनेशन नोटिस मिला है।

मल्होत्रा : सुनो डीयर, मैं तुमसे खुद ही बात करना चाहता था। मुझे ऑफिस में एक लेडी-स्टेनो की जरूरत है। आई वांट यू ऐज माई लेडी-स्टेनो।

राजी : लेकिन मुझे ऑफिस का कोई अनुभव नहीं है। मैं टाइपिंग-शार्टहैंड कुछ भी नहीं जानती।

मल्होत्रा : डीयर, तुम जो कुछ हो वही बहुत है।

राजी : मल्होत्रा जी, मैंने आपसे हसबेंड के टर्मिनेशन के बारे में कहा था।

मल्होत्रा : देखो डीयर, इतनी छोटी-छोटी बात मत करो। हुक्म दो। मैं वही करूँगा।

राजी : तो मैं हसबेंड से क्या कहूँ?

मल्होत्रा : डीयर, मैं उस लैटर को कैंसिल कर दूँगा। बट यू मस्ट ज्वायन योर जॉब टूमारो।

राजी : मैं रंजन से भी बात कर लूँ।

मल्होत्रा : देखो डीयर लोग मुझे बहुत फास्ट कहते हैं। मैं चट मंगनी, पट विवाह में विश्वास करता हूँ। तुम अपना जॉब ज्वायन करके देखो। ऑफिस में तुम्हारी ही हुकूमत चलेगी।

राजी : अच्छा मल्होत्रा जी, मुझे मंजूर है।

मल्होत्रा : वेरी गुड। थ्री चीयरस् फार राजी शर्मा।

राजी : अच्छा मल्होत्रा जी, अब चलूँ।

मल्होत्रा : अभी कैसे जाओगी। इतने अच्छे निर्णय हुए हैं। इनको सेलीब्रेट करना होगा। **(कप में शराब डालता है)**

राजी : नो-नो, मैं ड्रिंक नहीं करती।

मल्होत्रा : ओ माई गौड। देखो डीयर, अपनी सोसायटी में ये सती सावित्री का पोज़ नहीं चलेगा। दरवाज़ा खोलकर बाहर आओ। देखो जिन्दगी कितनी खूबसूरत है।

राजी : नहीं, मल्होत्रा जी, मुझे आदत नहीं है।

मल्होत्रा : खैर कोई बात नहीं। मैं तुमको शरबत देता हूँ। इसमें अल्कोहल नहीं है।

[पहले दृश्य की वापसी]

शरबत का स्वाद बहुत अच्छा था। पर पीते ही मुझे नींद आ गयी। उसके बाद क्या हुआ, मुझे मालूम नहीं।

सुबह उठने पर मैंने अपने को मल्होत्रा के बेडरूम में पाया। वह शरबत नहीं, तेज शराब थी।

रंजन ने मुझसे कुछ नहीं पूछा। मुझे लगा कि पूरी योजना में वह भी शामिल था। पर मैं किस पर नाराज हो सकती थी। परिस्थितियों ने मुझे काजल की कोठरी में ढकेल दिया था। अब रोने से क्या फायदा था। प्रभु, मुझे क्षमा करना। मैं पति की खातिर मल्होत्रा पैलेस गयी थी।

मल्होत्रा ने दूसरे ही दिन मुझे लेने के लिए कार भेज दी। साथ में रंजन के नाम पत्र था। रंजन की सर्विस दो साल के लिए एक्सटेंड कर दी गयी थी।

ऑफिस में मेरा काम नगण्य था। मल्होत्रा सभी लोगों से मेरा परिचय कराता था। वे सब मुझे देखकर मुस्कराते थे।

उनकी मुस्कराहट मुझे अंदर तक चीर देती थी।

मल्होत्रा अक्सर टूर पर जाता था। मुझे भी साथ चलने के लिए प्रेस करता। मैं अजीब झमेले में फँस गयी थी।

छह महीने के बाद मल्होत्रा ने रंजन का ट्रांसफर मुम्बई कर दिया। मुझे गहरा शॉक लगा। रंजन के जाने से रही-सही सुरक्षा-पाँत ढह गयी। अपनी जिन्दगी पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं रह गया था। कहते हुए शर्म आती है कि मुझे साल में दो बार एबॉर्शन कराना पड़ा।

लगभग साल-भर के बाद रंजन लौटा। मेरे अंदर एक ज्वालामुखी सुलग रहा था। वह फूट पड़ा।

(फ्लैश-बैक)

राजी : नहीं रंजन, मैं यह जिन्दगी नहीं जी सकती।

रंजन : राजी, मल्होत्रा ने हमें सभी सुविधाएँ दे रखी हैं। तुम्हें किस बात का दुख है।

राजी : नहीं, यह सब गलत है। रंजन, मैं घुट रही हूँ। इससे तो मौत अच्छी है।

रंजन : राजी, शेर की माँद में रहकर उसका विरोध नहीं किया जा सकता।

राजी : हमें यह जॉब छोड़ देना चाहिए। कहीं चलो। हम दूसरी छोटी-मोटी नौकरी कर लेंगे।

रंजन : ठीक है। मुझे एक महीने का समय दो। मुम्बई में बिजनेस का बहुत स्कोप है। पर कुछ करने के लिए पूँजी चाहिए।

राजी : रंजन, मेरे पास माँ के गहने हैं। उससे पूँजी का प्रबन्ध हो जाएगा।

[पहले दृश्य की वापसी]

राजी : रंजन, पहले भी मुम्बई रह चुका था। उसके परिचितों का दायरा बहुत बड़ा था। हमें बांदरा में एक खोली मिल गयी। उसे एक दुकान भी मिल गयी। वह कस्टम के द्वारा जब्त की गयी वस्तुओं का बिजनेस करने लगा।

रात में रंजन के बिजनेस-पार्टनर्स् इकट्ठा होते। उनके

अजीब नाम थे—पप्पू, बिज्जू, लंगड़ा, शंभु। शायद उनके असली नाम कुछ और होंगे। मुझे वे सभी क्रिमिनल लगते थे। किसी माफिया गैंग के सदस्य। वे लगातार शराब पीते और खूब शोर मचाते थे।

एक दिन पुलिस आई। पुलिस के पास एक सूची थी। उसमें पप्पू और लंगड़ा का नाम था। मैं घर में अकेली थी। पुलिस पूछ-ताछ कर चली गयी।

रंजन के लौटने पर मैंने शिकायत की। रंजन पर इस घटना का कोई प्रभाव नहीं दिखाई पड़ा। कहने लगा कि पुलिस अपना हिस्सा लेने आई थी।

मैंने रंजन को समझाना चाहा।

(फ्लैश-बैक)

राजी : रंजन, तुम्हारे बिजनेस पार्टनर्स मुझे क्रिमिनल लगते हैं। ये तुम्हें एक दिन फँसा देंगे।

रंजन : यह सब तुम्हारे दिमाग का फितूर है। ये ही लोग मेरा बिजनेस चला रहे हैं। मुम्बई का कारोबार ऐसे ही चलता है।

राजी : रंजन, मुझे लगता है कि हम फिर कीचड़ में धंसते जा रहे हैं।

रंजन : ये सब मजदूर किस्म के लोग हैं। जान का जोखम उठाकर माल लाते हैं।

राजी : रंजन, मैं एक साफ-सुथरी जिन्दगी चाहती हूँ। यहाँ मेरे चारों तरफ आतंक है। मैं हर समय काँपती रहती हूँ।

रंजन : राजी, तुम जिसे माफिया गैंग कहती हो, उन्होंने तुम्हारे साथ कभी मिसबिहेव तो नहीं किया।

राजी : नहीं किया है। पर मैं इन पर विश्वास नहीं कर सकती।

रंजन : असल में तुम बहुत ऊँचा मन लेकर आयी हो। अच्छा यही है तुम बनारस लौट जाओ। गंगा नहाना और मंदिर में पूजा करना। बाकी चीजों के लिए पवन मल्होत्रा है ही।

राजी : रंजन, तुम्हें व्यंग करने का कोई हक़ नहीं है। तुम्हारे कहने पर मैं मल्होत्रा के यहाँ गयी थी।

रंजन : सुनो, इस बहस से कोई फायदा नहीं है। मैंने एक बड़ा सौदा

किया है। अगर किस्मत ने साथ दिया तो तुम्हें सब कुछ मिल जाएगा।

[पहले दृश्य की वापसी]

राजी : रंजन की किस्मत ने उसका साथ दिया। बहुत जल्दी सब कुछ बदल गया। हमें जल्दी ही एक खूबसूरत फ्लैट मिल गया। गैरेज में मोटर भी आ गयी।

मुझे बहुत खुशी हुई। रंजन ने अपना वादा पूरा किया था। हमें साफ-सुथरी जिन्दगी मिल गयी। पर क्या हमें साफ-सुथरे लोग भी मिले? इसका जवाब मिलने में देर हुई।

रंजन का सामाजिक दायरा बढ़ता ही जा रहा था। लोग बड़ी-बड़ी कारों पर आते थे। मैंने नये-नये नाम सुने—देसाई, कुलकर्णी, वाजिद शेख। इन लोगों के लिए होटल से खाना और पीने का सामान आता। ये खा-पीकर खूब शोर मचाते थे।

एक दिन साहनी आया। रंजन ने उसके लिए वी. आई. पी. व्यवस्था की थी। उसने मुझे बताया कि साहनी चीफ कस्टम ऑफिसर था। मुम्बई के फारेन ट्रेड का बादशाह। आयात-निर्यात की दुनिया में उसका शब्द ही कानून था।

रंजन ने साहनी से मेरा परिचय कराया। मुझे देखकर वह हँसा। उसकी हँसी अजीब थी। मुझे गाँव की रामलीला के रावण की हँसी याद आ गयी। बोला—ओ मिसेज़ शर्मा—ग्लैड टू मीट यू।

राजी : थैंक यू सर!

साहनी : (हँसकर) ओ येस! ओ येस।

राजी : आपसे मिल कर बहुत खुशी हुई, सर।

साहनी : (हँसकर) ओ येस! ओ येस! शी हैज द लुक ऐंड फिगर।

रंजन : येस सर। यू आर वेरी काइंड सर।

साहनी : शर्मा, पुराने लोग अधिक ईमानदार होते थे। खूबसूरत लड़कियों को नगरवधू का सम्मान देते थे। पर तुम एक पूरी आम्रपाली को पर्दे में रखे हो।

रंजन : येस सर! वेरी नाइस सर!

राजी : लेकिन सर, कोई भी लड़की खुशी से नगरवधू नहीं बनना चाहेगी। वह औरत का सम्मान नहीं अपमान था।

साहनी : ओह नो! ये सब किताबी बातें हैं। क्या समाज ने आम्रपाली को नगरवधू बनने के लिए मजबूर किया था? वह अपनी इच्छा से सेक्स गौडेस बनी थी।

रंजन : येस सर! वेरी राइट सर!

साहनी : अच्छा लगता है, शर्मा। ब्रिंग योर वाइल्ड फ्लावर इन द क्लब। मिसेज़ शर्मा को ताज़ी हवा की जरूरत है। अपने क्लब को भी नयी खुशबू मिलेगी।

रंजन : येस सर! जरूर लाऊँगा सर!

[पहले दृश्य की वापसी]

रंजन के साथ मैं सी-बीच क्लब गयी। ऐसी सजावट मैंने सिर्फ फिल्मों में देखी थी। मुझे लगा कि मैं इंद्रलोक में प्रवेश कर गयी हूँ। लोग तरह-तरह के खेल में मशगूल थे। बीच में बेहद खूबसूरत स्विमिंग पूल था। उसमें कई लोग तैर रहे थे। क्लब के कोने में हैल्थ सेंटर था। वहाँ मिसेज़ साहनी कई महिलाओं के साथ व्यायाम कर रही थीं।

रंजन ने मुझे मिसेज़ साहनी से इंट्रोड्यूज़ किया। मैंने उन्हें आदरपूर्वक प्रमाण किया। उसने मेरी उपेक्षा करते हुए रंजन से बातचीत की।

(फ्लैश-बैक)

मि. साहनी : शर्मा, तुम्हारी वाइफ को लोग जंगल का फूल कहते हैं।

राजी : मैडम, जंगल के फूल शहर में अपनी चमक खो देते हैं।

मि. साहनी : चमक-दमक की बात मुझे मालूम नहीं। पर ये गाँव की लड़कियाँ बहुत गंदी राजनीति लाती हैं। भई, मुझे उनसे बहुत डर लगता है।

रंजन ने मुझे जूली और जेनी से भी परिचय कराया। ये दोनों क्लब की स्विमिंग कोच थीं। ये क्लब की महिलाओं को तैरने की शिक्षा देती थीं। इन लड़कियों का व्यवहार बहुत मित्रतापूर्ण था। दरअसल ये लड़कियाँ नेपाल की थीं। क्लब में

उन्होंने अपना नाम बदल लिया था।

कुछ दिनों के बाद ये लड़कियाँ मुझसे मिलने घर आईं। उनकी पूरी कहानी सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। ये अपने पिता के साथ पोखरा से बनारस जा रही थीं। बीच में एक दलाल साथ लग गया। वह उन्हें फुसलाकर मुम्बई लाया। कई हाथों में गुज़रने के बाद ये क्लब में आईं। इनको क्लब में काम करते कई साल हो गये थे।

जूली और जेनी घर लौटने की बहुत इच्छुक थीं। पर क्लब के लोग उन्हें छोड़ने को तैयार नहीं थे।

मैंने रंजन से इन लड़कियाँ का जिक्र किया। सुनकर वह भड़क गया।

(फ्लैश-बैक)

रंजन : इन लड़कियों को किस बात की तकलीफ़ है। हम इन्हें कोठे से निकाल कर लाये हैं। वरना ये वहीं मर-खप जातीं।

राजी : रंजन, अगर ये लड़कियाँ सच बोलती हैं तो क्लब में भी इनका काम कोठे से भिन्न नहीं है।

रंजन : राजी, क्या लड़कियों ने तुमसे यह सब कहा है। इस इल्ज़ाम के लिए लड़कियों को कठोर दण्ड भुगतना पड़ेगा।

राजी : रंजन, तुम बात का बतंगड़ बना रहे हो। बेचारी लड़कियाँ अपने बूढ़े-बीमार बाप से मिलना चाहती हैं। इसमें क्या बुराई है?

रंजन : मैं कुछ नहीं कह सकता। क्लब में साहनी साहब की हुकूमत चलती है। उनकी मर्जी के बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता।

मुझे नेपाली बहनों के साथ गहरी सहानुभूति हो गयी थी। मैंने साहनी से उनके बारे में कहा। सुनकर साहनी क्रोध से भर गया।

(फ्लैश-बैक)

ओ नेपाली सिस्टर्स ! वे तो शाही जिन्दगी जी रही हैं। वे क्यों शिकायत करती हैं।

राजी : सर, शिकायत की बात नहीं है। लड़कियाँ अपने बूढ़े पिता से मिलना चाहती हैं। इसमें क्लब को क्या एतराज हो सकता है।

साहनी : यह सब झूठ है। कमाने वाली लड़कियों के न जाने कितने बाप पैदा हो जाते हैं। वे लोग अब तक कहाँ थे।

राजी : सर, सुना है कि उनके पिता आये थे। पर क्लब के लोगों ने उन्हें मार-पीट कर भगा दिया।

साहनी : दिस इज़ शीयर लाई! लड़कियाँ बिना वजह क्लब को बदनाम कर रही हैं।

राजी : लोगों का कहना है कि लड़कियों को बंधुआ मजदूर बना कर रखा गया है।

साहनी : मिसेज़ शर्मा, कम-से-कम तुमको ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए। तुम क्लब को अच्छी तरह जानती हो। हमारा क्लब शहर का सबसे अच्छा क्लब है।

[पहले दृश्य की पुनरावृत्ति]

राजी : सच तो यह है कि मैं क्लब को अच्छी तरह नहीं जानती थी। यह भी सच है कि मैं साहनी साहब को भी अच्छी तरह नहीं जानती थी। मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि मेरी सहानुभूति लड़कियों को इतनी महँगी पड़ेगी।

दूसरे दिन सुबह रंजन ने खबर दी कि क्लब के स्विमिंग पूल में जूली की लाश मिली है। कहते हैं कि क्लब बंद होने के बाद वह स्विमिंग पूल में तैरने गयी थी। गहरे नशे के कारण यह दुर्घटना हो गयी।

जूली के डूबने की बात सुनकर मुझे गहरा झटका लगा। जो लड़की खुद स्विमिंग-कोच हो, वह कैसे डूब सकती है। मैंने रंजन से यह बात कही।

(फ्लैश-बैक)

राजी : रंजन, यह दुर्घटना नहीं है। जूली की हत्या की गयी है।

रंजन : पुलिस ने जाँच की है। पुलिस की रिपोर्ट पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं है।

राजी : कोई भी रिपोर्ट एक झूठ को सच नहीं बना सकती।

रंजन : लड़की एहसान-फरोश थी। उसने कुछ आपत्ति-जनक चिट्ठियाँ लिखी थीं। वह क्लब के खिलाफ अनर्गल प्रचार कर रही थी। ईश्वर ने उसे सही सजा दी है।

राजी : रंजन, यह ईश्वर की सजा नहीं है। लोगों ने मिलकर एक बेकसूर लड़की का खून किया है। ईश्वर उन्हें कभी माफ नहीं करेगा।

[पहले दृश्य की पुनरावृत्ति]

इस घटना से मेरे और रंजन के बीच नया तनाव पैदा हो गया। मैंने क्लब जाना छोड़ दिया। क्लब की जगमगाती दुनिया के बीच घुप अँधेरा था। एक खूबसूरत फूलों की क्यारी के नीचे कंकाल के ढेर थे।

एक दिन, रात में रंजन के नाम कई टेलीफोन आये। रंजन बहुत घबराई आवाज़ में बात कर रहा था। मैं भी परेशान हो गयी।

(फ्लैश-बैक)

राजी : क्या हुआ रंजन! खैरियत तो है!

रंजन : सब कुछ खत्म हो गया।

राजी : क्यों क्या हुआ? किसका टेलीफोन था?

रंजन : पप्पू का फोन था। कोस्टल गार्डस् ने हमारा स्टीमर पकड़ लिया है। उसमें पाँच करोड़ का सोना था।

राजी : रंजन, यह तुम्हारी दुनिया है। मैं इसमें क्या सलाह दे सकती हूँ। इस दुनिया के भी कुछ कायदे-कानून होंगे।

रंजन : यहाँ जंगल का कानून चलता है। यहाँ हरेक आदमी हर दूसरे आदमी के खिलाफ काम करता है।

राजी : रंजन, पुलिस के लोग तुमसे हफ्तावारी ले जाते हैं।

रंजन : जो हफ्तावारी लेते हैं वे दूसरे लोग हैं। माल पकड़े जाने के बाद वे कुछ भी मदद नहीं कर सकते।

राजी : रंजन, अच्छा यही है कि तुम कानून के सामने आत्मसमर्पण कर दो।

रंजन : क्या कह रही हो। कस्टम विभाग पूरा माल जब्त कर लेगा।

हमें जेल भी हो सकती है।

राजी : रंजन, तुम साहनी साहब से क्यों नहीं बात करते। तुम्हारे परिचित हैं। यहाँ भी आते-जाते रहे हैं।

रंजन : मैंने साहनी साहब को फोन किया था। साहनी साहब माथेरान गये हुए हैं। तीन-चार दिन के बाद आयेंगे।

राजी : तुमने माथेरान फोन क्यों नहीं किया।

रंजन : मैंने माथेरान फोन किया था। साहनी साहब ने मेरी गिरफ्तारी रुकवा दी है।

राजी : थैंक गौड! फिर क्या प्राब्लेम है।

रंजन : मेरा माल नहीं रिलीज़ हुआ। अगर वह जब्त हुआ तो हम बिलकुल बर्बाद हो जायेंगे।

राजी : तुमने अपने माल के बारे में नहीं कहा?

रंजन : कहा था। साहनी साहब सौदा कर रहे हैं। मज़ाक कर रहे थे कि वाइल्ड फ्लावर को भेज दो, सब ठीक हो जायगा।

राजी : इसके माने?

रंजन : राजी, अगर तुम ठीक से पैरवी करो तो सब कुछ ठीक हो सकता है।

राजी : यानि कि मैं माथेरान जाऊँ। साहनी की सभी अराजक इच्छाएँ पूरी करूँ। उसे अपना गोश्त खिलाऊँ। साहनी साहब अपने परिचित हैं। उन्हें ऐसा गंदा प्रस्ताव नहीं करना चाहिए था।

रंजन : राजी, अच्छा क्या है, बुरा क्या है, सब जानते हैं। पर सभी शिकार की ताक में रहते हैं।

राजी : रंजन, यह असंभव है। यह नहीं हो सकता। किसी कीमत पर नहीं हो सकता।

रंजन : राजी, बुरा मत मानना। जूली की मौत पर तुमने जिस तरह शोर मचाया उससे साहनी साहब बहुत नाराज़ हुए थे।

राजी : जूली की मौत से साहनी साहब को क्या लेना-देना था।

रंजन : कुछ नहीं था। पर तुमने उस दिन बिना वजह पालिटिक्स किया। आज साहनी साहब पालिटिक्स कर रहे हैं।

राजी : मुझे साहनी साहब बहुत छोटे दिमाग के आदमी लगते हैं।

रंजन : राजी, मत कहो यह सब। सच तो यह है कि साहनी साहब ही मुझे जेल से बचा सकते हैं। उनके एक इशारे पर जब्त माल भी छूट सकता है।

राजी : रंजन, एक दिन तुमने मुझे मल्होत्रा साहब के पास भेजा था। मैं आज भी उस अपमान को भूल नहीं सकी हूँ। तुम मुझे फिर साहनी साहब के पास भेजना चाहते हो। रंजन, इस जिन्दगी से तो मौत अच्छी है।

रंजन : राजी, कुछ लोग अमृत का घड़ा लेकर आते हैं। ये लोग नहीं जानते कि अंधेरा क्या होता है। दूसरी तरफ मेरे जैसे करोड़ों लोग हैं जो अभाव में जन्में हैं। इस जिन्दगी में कुछ भी पाने के लिए हमें जहर पीना पड़ता है। इज्ज़त और अस्मत का सौदा करना पड़ता है।

राजी : नहीं रंजन, मत कहो यह सब।

रंजन : राजी, मैं भी इस तरह की जिन्दगी से ऊब गया हूँ। मुझे एक मौका और दो। उसके बाद हम दोनों शहर छोड़ देंगे। गाँव के पास झोंपड़ी बनाकर रहेंगे। तुम्हारे लिए एक मंदिर बनवा दूँगा।

राजी : रंजन, ईश्वर हमें कभी माफ नहीं करेगा।

रंजन : राजी, ईश्वर सब कुछ देखता है, सब कुछ जानता है। वह हमें जरूर माफ कर देगा।

राजी : रंजन, मुझे सोचने दो।

रंजन : राजी, मुझ पर विश्वास करो। ऐसी स्थिति फिर कभी नहीं आयेगी।

राजी : रंजन, वायदा करो कि फिर कभी ऐसा आग्रह नहीं करोगे।

रंजन : राजी, मुझे माफ कर दो। भविष्य में ऐसा नहीं होगा। लो यह रिवाल्वर। अगर तुम्हारी इज्ज़त पर कभी आँच आये तो सबसे पहले मुझे गोली से उड़ा देना।

राजी : रंजन, यह सब क्या कह रहे हो!

रंजन : राजी, मैं साहनी साहब को फोन कर देता हूँ। उनको बिना वजह इरीटेट मत करना। जरूरी नहीं है कि वह तुम्हारे साथ

मिसबिहेव करें।

[पहले दृश्य की पुनरावृत्ति]

राजी : साहनी साहब ने मेरे साथ वैसा ही बर्ताव किया जिसका अनुमान था। शराब पीकर उसने जानवरों के जैसा व्यवहार किया। उसने मुझे भी शराब पीने पर मजबूर किया। मुझे न जाने किस पाप का दंड मिल रहा था। मैं हर क्षण एक नरक भुगत रही थी।

मैंने साहनी साहब से रंजन की समस्या पर बात करने की कोशिश की। वह हर बार बात को टाल देता था। एक दिन मैंने उस मामले को फिर उठाया।

(फ्लैश-बैक)

राजी : साहनी जी, मुझे आये कई दिन हो गये। रंजन परेशान हो रहा होगा।

साहनी : मिसेज़ शर्मा, कोई प्राब्लेम नहीं है। मैंने उसकी गिरफ्तारी रोकवा दी है।

राजी : रंजन ने कुछ माल मँगाया था। कस्टम विभाग ने उसे जब्त कर लिया है।

साहनी : मिसेज़ शर्मा कस्टम विभाग के अनुसार पांच करोड़ का माल है। काम बहुत आसान नहीं है।

राजी : रंजन कह रहा था कि आप चाहें तो माल तुरंत रिलीज़ हो सकता है।

साहनी : नो-नो, रंजन नहीं जानता। मुझे कमिश्नर को कंसल्ट करना होगा। मिसेज़ शर्मा, क्या तुम कमिश्नर के पास चलना चाहोगी?

राजी : मैं जाकर क्या करूँगी। मेरा कोई परिचय नहीं है।

साहनी : (हंसकर) मिसेज़ शर्मा, परिचय की क्या जरूरत है। तुम्हारी जैसी खूबसूरत औरत की पैरवी को कौन रिजेक्ट कर सकता है।

राजी : आप मज़ाक कर रहे हैं। मैं कहीं नहीं जाऊँगी।

साहनी : अच्छा देखता हूँ। मिसेज़ शर्मा! तुमने क्लब जाना छोड़ दिया।

मैं तुमको क्लब में स्थायी रूप से रखना चाहता हूँ। जूली की डेथ हो गयी। वी हैव ए जौब फार यू।

राजी : नहीं मैं क्लब में काम नहीं करूँगी। मेरे पास समय भी नहीं है।

साहनी : काम तो कुछ खास नहीं है। खैर, मैं शर्मा से बात करूँगा।

[पहले दृश्य की वापसी]

राजी : घर पहुँचने पर रंजन ने बताया कि साहनी साहब का फोन आया था। आधा माल रिलीज हो गया है। शेष माल फिलहाल सरकारी कस्टडी में रहेगा। इसके मायने यह हुआ कि साहनी साहब ने पूरी मुट्ठी नहीं खोली है।

रंजन ने बताया कि साहनी साहब मुझे क्लब में केयर-टेकर के रूप में देखना चाहते हैं। रंजन ने अपनी स्वीकृति दे दी है।

यह सुनकर मैं आग बबूला हो गयी। नहीं-नहीं, मैं अब किसी समझौते के लिए तैयार नहीं थी।

(फ्लैश-बैक)

राजी : रंजन, मैं किसी हालत में क्लब नहीं जाऊँगी।

रंजन : क्यों क्लब में क्या बुराई है। साहनी साहब ने खुद ऑफर किया है। इस पोस्ट के लिए कितनी लड़कियाँ दौड़ रही हैं।

राजी : नहीं यह असंभव है। क्लब की असलियत को मुझे जूली ने बताया था।

रंजन : राजी, तुम फिर जूली की बात कर रही हो। आखिर तुम चाहती क्या हो!

राजी : सुनो, मैं साहनी साहब की बंधुआ मजदूरी नहीं कर सकती।

रंजन : तुम पूरा हफ्ता साहनी साहब के साथ रहीं। तुम चाहे जो कहो तुमने इस ट्रिप को एनज्वाय किया है।

राजी : यह सब झूठ है। तुम्हें यह सब कहते शर्म नहीं आती।

रंजन : राजी, तुम बिना वजह बखेड़ा करती हो। हम जिस तरह की जिन्दगी जी रहे हैं उसके कायदे-कानूनों को मानना पड़ेगा।

राजी : नहीं, मैं साहनी साहब से सुलह नहीं कर सकती। मैं उनसे

गहरी नफरत करती हूँ।

रंजन : राजी, कस्टम के मामले में मेरी गर्दन फँसी हुई है। मैं साहनी साहब का विरोध नहीं कर सकता।

राजी : रंजन, तुम अपना हिसाब-किताब रखो। मेरा रास्ता अलग है।

रंजन : राजी, दिक्कत यह है कि तुम छोटी-छोटी बातों को बहुत महत्त्व देती हो। हम जिस समाज में रहते हैं उसमें इस तरह का आदान-प्रदान चलता रहता है।

राजी : आदान-प्रदान—इसका क्या अर्थ है?

रंजन : राजी, मैं बहुत फ्रैंक आदमी हूँ। बुरा मत मानना। आज की दुनिया बहुत मेच्योर हो गयी है।

राजी : तुम क्या कह रहे हो। मेरी समझ में कुछ नहीं आता।

रंजन : तो ठीक से सुनो। तुम जिस समय साहनी साहब के साथ सौदा कर रही थीं, उसी समय साहनी साहब की वाइफ सुधा मेरे साथ एक होटल में बिना शादी का हनीमून मना रही थीं।

राजी : मिसेज़ साहनी और तुम—यह क्या सच है।

रंजन : राजी, इस तरह आँख क्यों चढ़ा रही हो। तुमने माथेरान में मौज किया। मैंने यहाँ गलत किया। यह तो बराबरी का सौदा हुआ।

राजी : रंजन, तुम मेरे चरित्र पर लांछन लगा रहे हो।

रंजन : तब तुम क्या अपने को सीता-सावित्री समझती हो। भाषण बहुत देती हो। पर यह सब ढोंग है। मिसेज़ साहनी तुमसे हजार-गुना अच्छी है। लाइफ एनज्वाय करती हैं। तुम्हारी तरह ढोंग नहीं करती।

राजी : मैंने अपना पूरा जीवन, यहाँ तक कि अपना चरित्र तुम्हारे लिए बलिदान किया। अब तुम मुझे ढोंगी और बदचलन कह रहे हो।

रंजन : सच्चाई कभी-कभी बहुत कड़वी होती है। मैंने तो तुम्हारे सामने सिर्फ एक आईना रख दिया है।

राजी : अगर यही सब सच है तो मुझे अब जीने का कोई अधिकार नहीं है। **(राजी रिवाल्वर उठा लेती है)**

रंजन : अरे, यह क्या कर रही हो। रख दो रिवाल्वर। उसमें गोलियाँ भरी हुई हैं।

राजी : खबरदार, मुझे मत छूना। और मैं तुम्हें भी उस चुड़ैल के साथ मौज करने के लिए नहीं छोड़ जाऊँगी। ईश्वर मुझे माफ करना। **(रिवाल्वर की आवाज़)**

[पहले दृश्य की पुनरावृत्ति]

राजी : रिवाल्वर चलते ही रंजन कटे पेड़ की तरह गिर पड़ा। मैंने दूसरी बार रिवाल्वर चलाकर आत्महत्या करना चाहा पर रिवाल्वर में सिर्फ एक गोली थी। तब तक मुहल्ले के लोगों ने मुझे पकड़ लिया।

जज महोदय, मेरी यही कहानी है। सिपाही जी, जरा एक गिलास पानी दीजिये।

सिपाही : ठीक है, अभी लाता हूँ।

स. वकील : योर ऑनर, मुजरिमा राजी शर्मा ने एक लम्बा बयान देकर अपने को निर्दोष सिद्ध करने की कोशिश की है। पर मिसेज़ शर्मा को कानून अपने हाथ में लेने का कोई हक नहीं था। पति की हत्या कर उन्होंने कानून का उपहास किया है। इन्हें कड़ा-से-कड़ा दंड दिया जाय।

जज : अदालत ने मुजरिमा का बयान और सरकारी वकील की दलीलों को सुना। मिसेज़ शर्मा ने हत्या की बात को कबूल किया है। सवाल यह है कि उन्होंने ऐसा क्यों किया। सरकारी वकील की दलील है कि मुजरिमा एक चरित्रहीन महिला है। पर यह प्रमाणित नहीं हुआ। दूसरी तरफ पति रंजन की चरित्रहीनता ही सामने आयी है।

कानून के अनुसार मिसेज़ शर्मा हत्या के जुर्म में गुनहगार हैं। पर मानवीय तत्वों एवं परिस्थितियों के दबाव की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

अतः यह अदालत पति की हत्या के जुर्म में श्रीमती शर्मा को छह महीने के कारावास की सजा देती है। पर चूंकि वे छह महीना कारावास में बिता चुकी हैं। अतः उन्हें बाइज्जत रिहा

किया जाता है।

सिपाही : मेम साहब, उठिये। आपका फैसला हो गया। आपकी रिहाई हो गयी है।

(शोर)

सिपाही : हे भगवान्, हुजूर मिसेज़ शर्मा ने जहर खा लिया है। उन्होंने अदालत के फैसले का इंतज़ार नहीं किया।

(शोर)

(संगीत वादन)

मुर्दे नहीं बनना चाहते करोड़ पति

(एक हास्य नाटिका)

पात्र

बम-बम सरकार	50 वर्ष
जमूरा	22 वर्ष
जनवरी सिंह	40 वर्ष
फरवरी सिंह	45 वर्ष
अष्टभुजा देवी	25 वर्ष
धुरंधर सिंह	50 वर्ष
यमराज	
लछमिनिया	25 वर्ष
अन्य कुछ लोग	

कथासार

इस एकांकी का मिजाज एक हास्य-नाटिका का है। पर इसके पात्र कुछ गहरे सामाजिक सवाल भी करते हैं।

एक जादूगर तीन मुर्दों को जीवन दान देता है। पर दूसरा जीवन पाकर भी ये मुर्दे खुश नहीं हैं। ये करोड़ पति भी नहीं बनना चाहते।

ये तीनों पात्र अन्याय से लड़कर मरे थे। पर मर कर भी क्राइम और क्रिमिनल उनका पीछा नहीं छोड़ते।

दूसरी दुनिया का प्रतिनिधि है—दारोगा, धुरंधर सिंह। उधर कर्मफल का लेखा-जोखा रखने वाला यमराज है। उसकी सूची है।

एक तीसरी पात्र है, नर्तकी लछमिनिया। लछमिनिया के रूप और कला में फँसकर धुरंधर सिंह अपना लक्ष्य भूल जाता है।

धुरंधर सिंह के प्रस्थान के बाद तीनों पात्रों के लिए दुनिया रहने लायक हो जाती है।

[**स्थान**–सड़क के किनारे एक खुला मंच। **समय** : संध्या पाँच बजे।]

[डुग्गे बजाते हुए जमूरे का प्रवेश]

जमूरा : खलक खुदा का, मुलुक
राष्ट्रपति का और आज की महफिल जादू के शहनशाह
बम-बम सरकार की!
(जमूरा फिर डुग्गी बजाता है।)
आ गये! आ गये जादूगर हौदिनी के गुरु, गोगिया पाशा के
बाप,

जादूगर : सम्राट बम-बम सरकार।

[बम - बम सरकार का प्रवेश]

[पब्लिक ताली बजाती है]

सरकार : जमूरे।

जमूरा : हाँ, उस्ताद।

सरकार : जमूरे, सब तैयारी हो गयी।

जमूरा : हाँ, उस्ताद! सब तैयारी हो गयी। जादू की टेबुल, तारा की गड्डी, पानी का ड्रम और कबूतर–सब कुछ आ गया।

सरकार : ठीक है। चलो खेल शुरू करते हैं। जय काली, कलकत्ते वाली। ब्रह्मा की बेटी, विष्णु की साली।

[पब्लिक ताली बजाती है]

सरकार : जमूरे, पब्लिक खेल शुरू होने के पहले ताली क्यों बजाती है।

जमूरा : उस्ताद, ये सब बूगी-गूगी के नवजवान हैं। कहने पर ताली बजाते हैं।

एक आवाज़ : हम ये पुराने खेल नहीं देखना चाहते।

सरकार : पुराना खेल। हमारे दादा ने यही खेल दिखाया। तुम्हारे दादा

ने यही खेल देखा।
हमारे बाप ने यही खेल दिखाया।
तुम्हारे बाप ने यही खेल देखा।
अब तुम कहते हो कि हम इस खेल को नहीं देखेंगे।

दूसरी आवाज़ : हम इन खेलों को देख चुके हैं। कुछ नया दिखाइये।

सरकार : ठीक है। हम नया खेल दिखाते हैं। मंच पर आये तीन जवान। हम मंत्रों के बल से इन्हें मुर्दा बना देंगे। फिर ये भूत-भविष्य की बात बतायेंगे।

तीसरी आवाज़ : जिन्दा को मुर्दा बनाने का काम उग्रवादी भी करते हैं। क्या आप मुर्दों को जिन्दा कर सकते हैं?

सरकार : हाँ, मुर्दों को जिन्दा कर सकता हूँ। जमूरे, वह सामने अस्पताल है। उसके बगल में मुर्दाघर है। तुम सिविल सर्जन साहब से परमिशन लेकर तीन मुर्दे ले आओ।

जमूरा : उस्ताद, लगता है कि पब्लिक मुर्दों का इंतजाम कर चुकी है। वह देखो नवजवान अपने कंधों पर लादकर मुर्दे ला रहे हैं। कुल तीन मुर्दे हैं। दो पुरुषों के शव हैं। एक औरत की लाश है।

['राम नाम सत्य है' की सामूहिक ध्वनि के साथ मंच पर मुर्दे लाये जाते हैं।]

सरकार : ठीक है। अब हम अपना खेल शुरू करते हैं। मुर्दों को जिन्दा करने का खेल।

[पब्लिक ताली बजाती है।]

सरकार : जमूरे, पहले मुर्दे को सामने लाओ। खोल दो उसका कफन।

जमूरा : उस्ताद, सब कुछ कर दिया।

सरकार : जमूरे, पहले मुर्दे का नाम क्या है?

जमूरा : उस्ताद, उसका नाम है बाबू जनवरी सिंह।

सरकार : जमूरे, इसका ऐसा ऊटपटाँग नाम क्यों है?

जमूरा : उस्ताद, इसका जन्म जनवरी में हुआ था। इसने जनवरी में अपने पड़ोसी की हत्या की थी। इसने उसी महीने में आत्महत्या की है।

सरकार : ठीक है। सबसे पहले मैं इसे जिन्दा करता हूँ।
जय काली कलकत्ते वाली, ब्रह्मा की बेटी, विष्णु की साली।
मेरा मंत्र न जाये खाली।
फूऽऽऽ!फूऽऽऽ!फूऽऽऽ!

जमूरा : उस्ताद! कमाल हो गया! मुर्दा हरकत कर रहा है। अरे, वह उठ बैठा।

[पब्लिक ताली बजाती है।]

सरकार : सुनिये भाई साहब, आपका नाम जनवरी सिंह है।

जनवरी : जी हाँ आपकी सूचना ठीक है।

सरकार : आपने अपने पड़ोसी की हत्या की थी?

जनवरी : जी हाँ, यह भी ठीक है। मेरे शहर में भयानक भूकम्प आया था। मेरा मकान ढह गया। पड़ोसी का मकान भी गिरा। दोनों का मलबा एक ही था। पड़ोसी ने मेरी ज़मीन पर कब्ज़ा कर लिया।

सरकार : आपने विरोध क्यों नहीं किया?

जनवरी : कस कर विरोध किया। उसने कहा कि भूकम्प देवता ने उसे जमीन दी है।

सरकार : आपने थाना-कचहरी क्यों नहीं की?

जनवरी : कोई फायदा नहीं था। थानेदार पड़ोसी से मिला हुआ था। कचहरी के फैसले में दस साल लग जाते।

सरकार : तब क्या हुआ?

जनवरी : मैंने एक देसी पिस्टल से पड़ोसी की हत्या कर दी। थाने से दरोगा-पुलिस आने से पहले मैंने आत्महत्या कर ली।

सरकार : ठीक है। हम फिलहाल एक शॉर्ट ब्रेक लेते हैं। मैं थोड़ी देर के बाद आपसे फिर बात करूंगा।

जनवरी : ठीक है।

सरकार : जमूरे, अब दूसरे मुर्दे को ले आओ।

जमूरा : ले आया उस्ताद।

सरकार : जमूरे, इस मुर्दे का नाम क्या है?

जमूरा : उस्ताद, इसका नाम फरवरी सिंह है। इसका जन्म फरवरी में

हुआ था। इसने शहर के सबसे बड़े रंगदार की हत्या की थी। पर यह बाद में डर गया। इसने भी आत्महत्या कर ली।

सरकार : ठीक है। यह दूसरी जिन्दगी का हकदार है।
जय काली कलकत्ते वाली, ब्रह्मा की बेटी, विष्णु की साली।
मेरा मंत्र न जाये खाली।
फूऽऽऽ! फूऽऽऽ! फूऽऽऽ!

जमूरा : उस्ताद, कमाल है। मुर्दा उठ बैठा।

फरवरी : मैं कहाँ हूँ। आप लोग कौन हैं।

सरकार : मैं जादूगर बम-बम सरकार हूँ। मैंने आपको नयी जिन्दगी दी है। आपने मुन्ना दादा की हत्या की थी।

फरवरी : मुन्ना दादा शहर का सबसे बड़ा रंगदार था। मेरी एक छोटी सी कपड़े की दुकान थी। वह हर महीने मुझसे रंगदारी टैक्स ले जाता था। इस बार उसने दो लाख रुपये की माँग की। उसने मेरे लड़के के अपहरण की धमकी दी। मेरे सामने कोई चारा नहीं था। मैंने उसके घर में आग लगा दी।

सरकार : तब आपने आत्महत्या क्यों की?

फरवरी : मुन्ना दादा के सपोर्टर की संख्या बहुत बड़ी थी। स्वयं दरोगा भी उसका सपोर्टर था। मैं सबका मुकाबला नहीं कर सकता था। मैंने आत्महत्या कर ली।

सरकार : ठीक है, आपसे थोड़ी देर बाद बात करूँगा। जमूरा!

जमूरा : हाँ उस्ताद!

सरकार : महिला का शव ले आओ।

जमूरा : ले आया, उस्ताद।

सरकार : जय काली कलकत्ते वाली, ब्रह्मा की बेटी, विष्णु की साली।
मेरा मंत्र न जाये खाली।
फूऽऽऽ! फूऽऽऽ! फूऽऽऽ!

महिला : (जगकर) मैं कहाँ हूँ। आप कौन हैं।

सरकार : मैं जादूगर बम-बम सरकार हूँ। मैंने आपको नयी जिन्दगी दी है। आपका शुभ नाम?

महिला : मेरा नाम अष्टभुजा देवी है। मैंने अपनी सास की हत्या की

थी। उसके बाद मैं कुँए में कूद गयी।

सरकार : आप सचमुच अष्टभुजा देवी हैं। पर आपने सास की सेवा न कर उनकी हत्या कर दी। क्यों।

महिला : सास सेवा के काबिल नहीं थी। दिन-रात दहेज-दहेज का रोना रोती रहती थी। एक दिन मैं सो रही थी। वह मुझे जलाने आयी। मेरी नींद खुल गयी। मैंने उसे पटक कर उसका गला दबा दिया। फिर मैंने आत्महत्या कर ली।

सरकार : मैडम, आप सचमुच एक वीर महिला हैं। मैं थोड़ी देर बाद आपसे फिर बात करूँगा।

महिला : ठीक है। पर आपने जो कुछ किया, अच्छा नहीं किया है।

सरकार : यह आप क्या कह रही हैं। मैंने आपको नयी जिन्दगी दी है। क्या आप खुश नहीं हैं।

महिला : बिलकुल नहीं। इस नयी जिन्दगी को लेकर मैं क्या करूँगी। मेरे खिलाफ मर्डर का केस है। नगर दरोगा मुझे खोज रहा होगा।

सरकार : अच्छा, एक सवाल और। क्या आप करोड़पति-प्रतियोगिता में शामिल होकर करोड़पति बनना चाहती हैं।

महिला : माई गौड! मैं करोड़पति बनकर क्या करूंगी। ससुराल के लोग मुझे जीने नहीं देंगे।

सरकार : बहुत ताज्जुब की बात है। ठीक है मैं दूसरे मुर्दों से बात करता हूँ। बाबू जनवरी सिंह।

जनवरी : जी सरकार, क्या हुक्म है।

सरकार : आपको नयी जिन्दगी मिली हैं। क्या आप खुश हैं?

जनवरी : यह आप क्या कह रहे हैं। आपने तो नया बखेड़ा खड़ा कर दिया। मेरे खिलाफ मर्डर का केस है। नगर दरोगा मुझे तलाश कर रहा होगा।

सरकार : जरूरी नहीं है कि आपको सजा हो जाय।

जनवरी : कोई रास्ता नहीं है। दरोगा खुले आम कहता है कि एफ. आई. आर. के पहले एक लाख। एफ. आई. आर. के बाद दूसरा लाख। इतना पैसा कहाँ से आयेगा।

सरकार : सुनिये टी. वी. पर एक नयी पुरस्कार योजना शुरू हुई है। क्या आप उसमें शामिल होकर करोड़पति बनना चाहते हैं?

जनवरी : आप भी अच्छा मज़ाक करते हैं। अपनी जान ही बचाना मुश्किल है। एक करोड़ रुपये के माने डकैतों को खुला आमंत्रण। सरकार साहब आपने हमें फंसा दिया है।

सरकार : समझ गया। अब कहाँ है तीसरा आदमी। फरवरी महोदय को क्या कहना है!

फरवरी : सर, हमने सारी बातचीत सुन ली है। मुझे भी वही सब कहना है। इस जिन्दगी का कोई मतलब नहीं है।

सरकार : माई गौड! कोई नयी जिन्दगी नहीं चाहता। मौत के सामने जिन्दगी की कोई हैसियत नहीं है।

[दरोगा धुरंधर सिंह का प्रवेश]

धुरंधर : मिस्टर मैजिशियन, जिन्दगी बड़ी चीज़ है। जिन्दगी की रक्षा के लिए सरकार है। थाना और अदालत है। दरोगा धुरंधर सिंह है।

सरकार : अच्छा, आप दरोगा धुरंधर सिंह हैं?

धुरंधर : जी हाँ! जादूगर सम्राट, आपके स्टेज के पीछे तीन क्रिमिनल बैठे हैं। पर धुरंधर सिंह भी धुरंधर है। हमसे कोई नहीं बच सकता।

सरकार : मैं आपकी बात नहीं समझा।

धुरंधर : नहीं समझे तो अब समझ लीजिये। आपके हीरो-हीरोइन के खिलाफ मर्डर का केस है। ये एक-एक अदद खून करके मुर्दाघर में मुर्दों की एक्टिंग कर रहे थे।

जनवरी : क्या कह रहे हैं, दरोगा जी। यह सच नहीं है।

धुरंधर : उल्लू के पट्ठो, हम हैं धुरंधर सिंह। हमको कोई धोखा नहीं दे सकता। यमराज भी हमारा लोहा मानता है।

जमूरा : दादा, आसमान से एक हेलीकाप्टर उतर रहा है। लगता है कोई वी. आई. पी. आ रहा है।

सरकार : अरे बाप रे, यह तो यमराज का रथ है। यमराज पूरे दल के साथ आ रहा है।

[यमराज और यमदूत का प्रवेश]

यमराज : सूचना मिली थी कि तीन मुर्दे मुर्दाघर में पड़े हैं। ये यहाँ कैसे आ गये? ये तो जिन्दा लोगों की तरह बोल-बतिया रहे हैं।

धुरंधर : मिस्टर यमराज, ये तीनों क्रिमिनल हैं। ये मरे नहीं हैं। ये गिरफ्तारी से बचने के लिए मुर्दे की ऐक्टिंग कर रहे थे।

यमराज : क्या कह रहे हो, दारोगा जी! हमारे पास ई. सी. जी. की मशीन है। प्राण छूट जाने के बाद ही स्वर्ग जाने का परमिट बनता है। फिर चित्रगुप्त जी महाराज की कोर्ट में दुबारा जाँच होती है।

धुरंधर : यमराज महाराज, ये सब छंटे हुए बदमाश हैं। इन्होंने आपके पूरे डिपार्टमेंट को बेवकूफ बनाया है।

यमराज : यह नहीं हो सकता। अगर ऐसा हुआ तो सफाई देते-देते आफत आ जायगी।

धुरंधर : देखो यमराज भइया, हम तुम्हारी नौकरी पर लात नहीं मारना चाहते। पर मेरी भी ड्यूटी है। हम इन्हें कैसे छोड़ सकते हैं।

यमराज : धुरंधर भइया, चित्रगुप्त महाराज के कोर्ट से इनके लिए सम्मन जारी हो चुका है। अगर ये समय पर नहीं पहुँचे तो स्वर्गलोक में तूफान आ जाएगा।

धुरंधर : भइया, मैं तुम्हारा प्राब्लम समझता हूँ। पर मैं क्या करूँ। कम-से-कम दो-दो लाख का मामला है। कई लोगों का हिस्सा है।

यमराज : मैं इस नुकसान की भरपाई कर दूँगा। चलो मैं तुम्हें स्वर्गलोक घुमा लाता हूँ। बिलकुल फ्री ट्रिप—सब कुछ फाइव स्टार।

धुरंधर : क्या कहते हो! स्वर्गलोक में कुछ भी फाइव स्टार नहीं है। हजारों साल से एक ही रुटीन चल रही है। सुनता हूँ कि इन्द्र भगवान के दरबार में अब भी ध्रुपद-धम्मार गाया जाता है।

यमराज : क्या कहते हो। स्वर्गलोक में टी. वी., कम्प्यूटर-इंटरनेट सब कुछ पहुँच गया है। हाँ एक चीज़ के बारे में हम कुछ भी नहीं जानते।

धुरंधर : वह क्या है, भइया?

यमराज : स्वर्गलोक में हम घोटाला के बारे में कुछ नहीं जानते। वहाँ खाने-पीने की तंगी नहीं है। पर पिछले पाँच हजार साल से हम

लोगों का पे-स्केल वही है।

धुरंधर : देखो भइया, घोटाले की टेकनीक किताबों को पढ़कर नहीं सीखी जा सकती। इसके लिए बढ़िया गुरु की जरूरत होती है।

यमराज : हम तुम्हें अपना गुरू मानते हैं।

धुरंधर : अरे भइया हमें कहाँ ले जाकर बोर करोगे। यहाँ अपना दरबार है। अकबर बादशाह की तरह हमारे भी नवरत्न हैं।

यमराज : अरे हाँ, तुम्हारे दरबार की ही एक स्टार स्वर्गलोक पहुँच गयी है। उसके सामने इन्द्र भगवान की सभी अप्सराएँ मात हैं।

धुरंधर : यमराज भइया, उसका नाम क्या है?

यमराज : इन्द्र भगवान उसे स्वर्ग-सुंदरी कहते हैं। पर शायद उसका नाम लछमिनिया है।

धुरंधर : माई गौड, लछमिनिया वहाँ पहुँच गयी। यमराज भइया, लछमिनिया हीरा है—असली हीरा।

यमराज : हाँ, जब से लछमिनिया स्वर्गलोक गयी है, वहाँ की महफिलों में जान आ गयी है।

धुरधर : वाह रे लछमिनिया! चलो यमराज, हम तुम्हारे साथ यमलोक चलते हैं। थोड़ा चेंज हो जाएगा।

यमराज : लेकिन भइया, लछमिनिया फिलहाल स्वर्गलोक में नहीं है। वह एक महीने की छुट्टी लेकर यहाँ आयी है।

धुरंधर : ताज्जुब है। लछमिनिया यहाँ है। उससे भेंट करना चाहिए था।

यमराज : वह देखो, लछमिनिया आ रही है। तुमसे ही मिलने आ रही है।

[लछमिनिया का प्रवेश]

लछमिनिया : अरे यमराज भइया भी यहाँ है—प्रणाम भइया! और धुरंधर राजा, आ गयी तुम्हारी लछमिनिया।

धुरंधर : अरे वाह रे लछमिनिया जीते जी स्वर्ग पहुँच गयी। सुना है तूने वहाँ खूब रंग जमा लिया है!

लछमिनिया : धुरंधर राजा, लछमिनिया में नौ गुन हैं। अभी लोग पूरी

लछमिनिया को नहीं जानते। धुरंधर धीरे-धीरे जान जायेंगे।

लछमिनिया : पता नहीं लोग मेरी जुबान कब समझेंगे। एक किस्सा सुनाती हूँ।

लोगों की फरमाइश पर मैंने एक झूमर गाना शुरू किया। आपने उस बारह मासे को कितनी बार सुना है।

(गायन)

नयी झुलनियाँ की छैयाँ बलम, दुपहरिया बिताये जाओ रे।
चार महीना गरमी पड़त है।
टप-टप चूये पसीनवाँ बलम तनी, बेनिया डुलाये जाओ रे।
इसके बाद जाड़े और बरसात का जिक्र है।
क्या कहूँ, लोग मेरा गीत सुनकर झूमने की बजाये हँसने लगे।

धुरंधर : ऐसा क्यों हुआ, लछमिनिया?

लछमिनिया : धुरंधर राजा, स्वर्गलोक में जाड़ा, गरमी या बरसात नहीं होते—एक जैसा मौसम बारहो महीना रहता है।

यमराज : हाँ स्वर्ग में कोई बारहमासा नहीं गाता।

धुरंधर : सुना है, तुम एक महीने की छुट्टी पर आई हो?

लछमिनिया : क्या करूँ। वहाँ भी लोग पॉप-रैप की फरमाइश करने लगे हैं। एक दिन इन्द्र भगवान 'लगूड़ा-लगूड़ा' करने लगे। मैंने समझा कि लगड़े आम की फरमाइश हो रही है। बाद में पता लगा कि वे 'निमूड़ा-निमूड़ा' की फरमाइश कर रहे हैं।

धुरंधर : डीयर लछमिनिया, स्वर्गलोक बहुत अच्छी जगह है। यमराज भइया ने हमें इनवाइट किया है। सोच रहा हूँ कि एक चक्कर लगा आऊँ।

लछमिनिया : कब जाओगे?

धुरंधर : चलो, आज ही चलते हैं। यमराज भइया, हमें तुम्हारा प्रस्ताव मंजूर है। मैं एक महीने की छुट्टी ले लूँगा।

यमराज : ठीक है। सब लोग चलो। हाँ जादूगर सम्राट मुर्दों का मामला जैसा चाहो टेकिल कर लेना।

[यमराज, धुरंधर और लछमिनिया का प्रस्थान]

सरकार : अच्छा भाइयों इतने लम्बे ब्रेक के बाद हम आपका इंटरव्यू

फिर चालू करते हैं। स्थिति यह है कि दारोगा धुरंधर सिंह स्वर्ग चले गये। वे अब लौट कर नहीं आयेंगे। यमराज जी भी पूरा मामला चित्रगुप्त जी को रिपोर्ट करेंगे। पूरी उम्मीद है कि चित्रगुप्त आप सभी को एक्सटेंशन दे दें। अब आप बताइये कि आपको जिन्दगी चाहिए या मौत?

जनवरी : हम फिर जीना चाहते हैं।

फरवरी : हम यहीं रहना चाहते हैं। धुरंधर सिंह के घोटाला वर्कशाप के बाद धरती और स्वर्गलोक में कोई फर्क नहीं रह जाएगा।

अष्टभुजा : मैं भी पुनः जीना चाहती हूँ। जीने के लिए मैं सभी जोखिम उठाने को तैयार हूँ।

(संगीत वादन)

फैसला कब होगा?

(एक विचार एकांकी)

पात्र

डी. एस. पी. मुकर्जी
दारोगा पोपट लाल
डकैत युवक—अर्जुन कुमार
अशर्फी लाल—लड़के के पिता
खुशबू—अर्जुन की बहन
अखबार विक्रेता
उद्घोषक/उद्घोषिका

कथासार

इस कथा की शुरुआत एक बैंक-डकैती से होती है।

पुलिस मामले की जाँच कर रही है।

ताज्जुब तो यह है कि डकैत अर्जुन स्वयं आकर बयान देता है। वह लूटी गयी राशि को भी लौटाने की बात कहता है।

दूसरे,

इस घटना से समाज के अंधेरे खंडों पर भी प्रकाश पड़ता है।

अर्जुन ने तो सिर्फ नौ लाख लूटा था। बाकी दस लाख कहा गया?

फिर अर्जुन ने डकैती क्यों की? उसकी बहन खुशबू ने आत्महत्या क्यों की?

इस एकांकी के अंत में कई सवाल उभरते हैं। लेकिन उनका जवाब कौन देगा?

[स्थान : एक पुलिस थाना। समय : सुबह आठ बजे।]

[अखबार विक्रेता का प्रवेश]

अ. विक्रेता : आज की ताजा खबर! आज की ताजा खबर!
बनारस बैंक में भीषण डकैती। उन्नीस लाख रुपये की लूट।
(विक्रेता मुख्य ख़बर को दुहराता है)

[अखबार विक्रेता का प्रस्थान]

[टी. वी. उद्घोषिका का प्रवेश]

उद्घोषिका : यह इंडिया टूडे का न्यूज़ चैनल है। मैं उद्घोषिका नीला शर्मा आज की प्रमुख ख़बरें प्रस्तुत कर रही हूँ।
बिहार के आरा शहर में बनारस बैंक की एक शाखा में भयंकर डकैती की सूचना मिली है। बैंक वालों का कहना है कि डकैत पाँच-छह के ग्रुप में आये थे। वे जानवरों का मुखौटा लगाये हुए थे। उन्होंने सभी कर्मचारियों और ग्राहकों को बंदूक दिखाकर बाथरूम में बंद कर दिया। फिर खजांची से चाबी लेकर वे खजाने से उन्नीस लाख लेकर चलते बने। डकैतों का पता नहीं चल सका है। पुलिस मामले की जाँच कर रही है।

[उद्घोषिका का प्रस्थान]

[डी. एस. पी. मुकर्जी और दारोगा पोपट लाल का प्रवेश]

मुकर्जी : पोपट, पुलिस टीम लेकर एक दर्जन जगह रेड किया। क्रिमिनल्स का मीटिंग भी किया। पर कोई साला कबूल नहीं कोरता है।

पोपट : बौस, बड़ा सीरियस मामला है। पटना से लगातार वायरलेस मेसेज आ रहा है। बड़े साहब ने खुद फोन किया था।

मुकर्जी : क्या बोलेगा। अपनी किस्मत ही साली दो नम्बर की है। प्रमोशन का चांस था। साले डकैतों ने सब कुछ गंडगोल कर दिया।

पोपट : बौस, अपनी किस्मत भी वैसी ही है। पटना के बड़े साहब ने एवार्ड देने को कहा था। अगर यह मामला नहीं सलटा तो सब कुछ जहन्नुम में चला जाएगा।

मुकर्जी : पोपट, ऐसे बैठने से नहीं होगा। किछू कोरते होबे।

पोपट : दादा, पोपट बैठा नहीं है। बैंक के नीचे घीसू जूता मरम्मत करता है। रतन चाय बेचता है। गोविन्द की बक्से की दूकान है। मैंने तीनों को अरेस्ट कर लिया है।

मुकर्जी : कोई साला बोला। कबूल किया।

पोपट : नहीं कोई साला मुँह नहीं खोलता है।

मुकर्जी : पोपट, यू आर ए बिग फूल। अँधेरे में तीर चलाने से क्या होगा। एनक्वायरी के लिए पटना से टीम आ रहा है। फिर मीडिया वाला जान-निकाल लेगा।

पोपट : बौस, ये पोपट कच्ची गोली नहीं खेलता है। पटना की टीम आने से पहले एनकाऊँटर दिखा दूँगा। मीडिया वाला डेड बाडी की फोटो लेकर चला जाएगा।

मुकर्जी : माई गौड। पोपट तूमी कि बोलचेन। एइ भीषण व्यापार। सड़क पर इनक़लाब-जिन्दाबाद शुरू हो जाएगा। ये मीडिया वाला भी नहीं छोड़ेगा। दे वुड किल अस।

पोपट : तब दादा, क्या करना होगा।

मुकर्जी : ये सड़क-छाप मानुस बहुत हँगामा कोरेगा। मोटा असामी धरून। पैसा भी देगा, शोर भी नहीं कोरेगा।

पोपट : दादा, मोटा आदमी डकैती नहीं करता है।

मुकर्जी : पोपट तूमी बोका। अगर किछू नहीं कोरेगा तो बड़ा साहब जहन्नुम भेज देगा

[अर्जुन का प्रवेश]

मुकर्जी : तूमी के! कैसे-कैसे आया?

अर्जुन : मैं लोकल कॉलेज का स्टूडेंट हूँ। आपसे कुछ कहने आया हूँ।

मुकर्जी : तुम कॉलेज का स्टूडेंट है। क्या कहना माँगता।

अर्जुन : मिस्टर मुकर्जी, कल लोकल बैंक में डकैती हुई थी।

मुकर्जी : हाँ, वह न्यूज़ तो सब अखबार में आया था। हम एनक्वायरी कर रहा है।

अर्जुन : पर आपने डकैती के जुर्म में गलत आदमियों को अरेस्ट किया है। घीसू चमार, रतन चायवाला और गोविन्द बक्सावाला—इनमें कोई भी डकैत नहीं है। हो भी नहीं सकता।

मुकर्जी : तुम उनका पैरवी करने आया है।

अर्जुन : हाँ, मैं उनकी सफाई देने आया हूँ। ये बेहद गरीब लोग हैं। ये अनपढ़ भी हैं। ये डकैती की बात सोच भी नहीं सकते।

मुकर्जी : तुम कोई सबूत दे सकता है।

अर्जुन : मैं खुद सबसे बड़ा सबूत हूँ। डकैतों का लीडर मैं था। सारी योजना मैंने बनाई थी। आपने जिन्हें पकड़ा है वे सब बेगुनाह और बेकसूर हैं।

मुकर्जी : नानसेंस, तुम क्या बोलता है, तुम नहीं जानता।

अर्जुन : मैं पूरी जिम्मेदारी से कह रहा हूँ।

डकैती मैंने की थी। मैंने ही बैंक को लूटा है।

मुकर्जी : चलो, हमने मान लिया कि तीनों मुज़रिम बेगुनाह हैं। पर तुम मुज़रिम हो, इसका क्या सबूत है।

अर्जुन : सुना है कि बैंक के छिपे कैमरा ने डकैतों की फोटो खींची है।

मुकर्जी : हाँ, यह सच है। पर डकैत मास्क लगा कर आये थे।

अर्जुन : देखिये मेरे पास वह मास्क है। मैं इसी को पहन कर डकैती करने गया था।

मुकर्जी : चोमत्कार! बैंकेर फोटो एई मास्केर चित्र आश्चे।

पोपट : बौस, यह आधा सच बोल रहा है। पूरे सच के लिए इसकी पिटाई जरूरी है।

(पोपट अर्जुन को घूँसा मारता है)

अर्जुन : मैंने बैंक में डकैती की है। मैं पिटाई का हक़दार हूँ।

मुकर्जी : पोपट, स्टाप इट। मिस्टर अर्जुन तुमने जुर्म कबूल किया है। तुमको कुछ और कहना है।

अर्जुन : हाँ, मुझे कई बातें कहनी हैं। अखबार में जो कुछ छपा है, सच नहीं है। मैं बैंक से उन्नीस लाख नहीं कुल नौ लाख रुपया लेकर आया था। बाकी दस लाख के लिए बैंक के लोगों से पूछ-ताछ होनी चाहिए।

पोपट : तुम जानते हो कि तुम क्या कह रहे हो। एक मुज़रिम होकर तुम दूसरों पर इलज़ाम लगाते हो।

अर्जुन : मैं पूरी जिम्मेदारी से कह रहा हूँ।

मुकर्जी : ठीक है, हम इसकी जाँच करेंगे। पोपट, बड़े साहब को ख़बर करो। हाँ, बैंक के कर्मचारियों से भी पूछ-ताछ होनी चाहिए।

[पोपट का प्रस्थान]

अर्जुन : मुकर्जी साहब, बैंक के लोगों से पूछ-ताछ नहीं होगी। सुना है कि वह पैसा ऊपर से नीचे तक बँट चुका है।

[पोपट का प्रवेश]

पोपट : अर्जुन की गिरफ्तारी से बड़े साहब बहुत खुश हैं। उन्होंने बैंक के लोगों से पूछ-ताछ को मना किया है। कह रहे थे कि मुज़रिम झूठा इलज़ाम लगा रहा है।

मुकर्जी : अर्जुन, बड़े साहब का फैसला, अंतिम फैसला होता है। तुम इस काम में नये लगते हो। तुमने यह गलत काम क्यों किया?

अर्जुन : मुकर्जी साहब, जो कुछ हुआ है, मजबूरी में हुआ है।

पोपट : ऐसी कौन-सी मजबूरी थी?

अर्जुन : मेरी बहन खुशबू की शादी उसके सहपाठी किशन कुमार से तय हुई थी। यह एक लव मैरेज थी। अचानक लड़के के बाप ने दस लाख की माँग रख दी। मैंने पैसे के इंतजाम की हर तरह से कोशिश की। मैं सफल नहीं हुआ।

मैंने बैंक से भी लोन माँगा पर उन्होंने इनकार कर दिया। तब मेरे ऊपर भूत सवार हुआ। मैंने बैंक में डकैती की योजना बनाई।

मुकर्जी : उसके बाद···।

अर्जुन : मुझे बैंक से कुल नौ लाख मिला। मैं उस रुपये को लेकर लड़के के पिता अशर्फी लाल के पास गया। अशर्फी लाल ने

नौ लाख लेने से इनकार कर दिया।

(फ्लैश-बैक)

अर्जुन : चाचा जी, बहन खुशबू और किशन क्लासफेलो रहे हैं। शादी के इस प्रस्ताव के पीछे उनकी सहमति है। हमें आपका आशीर्वाद चाहिए।

अशर्फी : बबुआ, मैं सीधा-सादा आदमी हूँ! मुझे शादी से कोई एतराज नहीं है। पर दस लाख से कम में यह सौदा नहीं होगा।

अर्जुन : चाचा जी, मानवीय संबंधों को रुपये से मत तोलिये। मैं नौ लाख लाया हूँ। इसे स्वीकार कीजिये।

अशर्फी : बबुआ, शादी के बाजार में मेडिकल का रेट पंद्रह-बीस लाख चल रहा है। मैंने दस लाख कहा है। इससे कम नहीं लूँगा। तुम चाहो तो जा सकते हो।

(फ्लैश-बैक समाप्त)

अर्जुन : अशर्फी लाल ने तिलक का सारा सामान लौटा दिया।

मुकर्जी : क्या बोलेगा। वेरी अनफार्चुनेट। अब क्या करेगा?

अर्जुन : अब कुछ नहीं हो सकता। मैं नौ लाख लौटाने आया हूँ।

(एक ब्रीफकेस मुकर्जी को देता है)

मुकर्जी : तूमी अजब मानुस है। बहन की बियाह कैसे कोरेगा।

अर्जुन : वह किस्सा अब खत्म हो गया। दहेज की बात सुनकर बहन खुशबू को गहरा शॉक लगा था। उसे इस बात का गहरा सदमा था कि किशन ने दहेज के सवाल पर पिता का विरोध क्यों नहीं किया। इतना ही नहीं किशन दहेज के पैसे से फ्लैट और कार खरीदने की योजना बना रहा था।
खुशबू ने आत्महत्या कर ली।

(फ्लैश-बैक)

खुशबू (गीत गाती है)

सेनुरा के भाव बढ़ल बा रे माई,
माहुर मँगा द! माहुर मँगा द!
सेनुरा बदे मत करजा कढ़ाव,
हमरा बदे मत बोझवा बढ़ाव,

जिनगी के भाव घटल बा ए माई,
माहुर मँगा द! माहुर मँगा द!
सेनुरा···।

(गाना खत्म होने पर खुशबू जहर खाकर आत्महत्या कर लेती है)

(फ्लैश-बैक समाप्त)

मुकर्जी : क्या बोलेगा। कुछ समझ नहीं आता।

(पोपट अर्जुन को हथकड़ी लगाता है।)

अर्जुन : मुझे यह सजा कबूल है। पर क्या आप उन्हें भी सजा देंगे जिन्होंने डकैती के नाम पर दस लाख दबा लिया है। सुनता हूँ कि वह रकम दूर-दूर तक बँटी है। क्या आपका कानून उन तक पहुँचेगा। उन्हें भी बाँध सकेगा।

मुकर्जी : सबूत नहीं होने से क्या कोरेगा।

अर्जुन : मुकर्जी महोदय, मेरी बहन ने आत्महत्या की। क्योंकि उसके परिवार के पास पैसा नहीं था। सच कहा जाय तो वह आत्महत्या नहीं हत्या थी।

यह कोई अकेला उदाहरण नहीं है। आज घर-घर में खुशबू जैसी लड़कियों की मौत के अँधे कुँए में धकेला जा रहा है। क्या दहेज माँगने वालों पर कत्ल का मुकदमा नहीं चल सकता।

मुकर्जी : ब्वाय, हम सब इंडियन पेनल कोड को फालो करता है। वही हमारी लिमिट है।

सुनो अर्जुन, दूसरे सवालों का जवाब भारत के प्रधानमंत्री से पूछो। देश के बुद्धिजीवियों से पूछो। जो दहेज माँगते हैं, दहेज लेते हैं, उनसे पूछो।

[दो लड़कियों का प्रवेश]

प. लड़की : हाँ, हम यह सवाल देश के प्रधानमंत्री से पूछ रहे हैं।

दू. लड़की : यह सवाल हम देश के बुद्धिजीवियों से भी पूछ रहे हैं।

प. लड़की : दहेज के नाम पर युवा लड़कियों की हत्या कब तक की जाएगी?

दू. लड़की : उन लोगों पर हत्या का मुकदमा कब चलाया जाएगा?

दोनों : फैसला कब होगा? फैसला कब होगा? फैसला कब होगा?

वापस नहीं लौटती नदी

(एक मनोवैज्ञानिक रेडियो एकांकी)

पात्र

मनोज	28 वर्ष
माला	20 वर्ष
रीता	20 वर्ष
सुन्दर	32 वर्ष
डॉ. वर्मा	50 वर्ष
मिस जूली	22 वर्ष
मिस लीज़ा	24 वर्ष

कथासार

सुन्दर एक प्रख्यात युवा सितार वादक है और माला है उसकी शिष्या।

सुन्दर और माला-शिक्षक और छात्रा के बीच एक भावुक प्रेम अंगड़ाई लेने लगता है। दोनों सपने देखने लगते हैं।

पिता की अनुमति लेकर सुन्दर माला को प्रोग्राम के नाम पर बम्बई ले जाता है। डॉ. वर्मा को शक होता है और वे माला को बम्बई से वापस ले आते हैं।

पर माला के मन पर सुन्दर छाया रहता है। वह सुन्दर की तलाश में पुनः बम्बई जाती है। पर वहाँ एक नया सुन्दर मिलता है—शराब और सुन्दरियों से घिरा हुआ।

माला मनोज से विवाह करती है। कई सालों बाद सुन्दर फिर उसके जीवन में प्रवेश करता है। वह माला को तरह-तरह का प्रलोभन देता है। पर माला सुन्दर के प्रस्तावों को ठुकरा देती है। नहीं सुन्दर, नदी कभी वापस नहीं लौटती।

पहला दृश्य

[**स्थान :** मनोज का बेडरूम। **समय :** रात्रि के 9 बजे]

(कमरे में रेडियो से सितार की हल्की आवाज़)

रीता : भाभी! **(एक क्षण के बाद जोर से)** भाभी!

माला : कौन, रीता!

रीता : सो रही थीं, भाभी!

माला : नहीं, थोड़ा झपकी आ गयी थी!

रीता : भइया कब तक आयेंगे, भाभी?

माला : कोई ठीक नहीं है। आज क्लब का 'एनुअल डे' है। रात-भर फंक्शन चल सकता है।

रीता : भाभी, सुनती हूँ कि आज क्लब में पंडित सुन्दर राज का सितार है।

माला : हाँ, वही आज के मुख्य कलाकार हैं।

रीता : सुन्दर जी कितने बड़े कलाकार हैं। उनके सामने बैठकर सुनने में बड़ा मजा आता है।

माला : हाँ, इधर उन्हें बड़ी शोहरत मिली है। कई बार विदेश हो आये हैं।

रीता : भाभी, सुनती हूँ कि सुन्दर जी तुम्हारे संगीत-गुरु रहे हैं। उन्होंने तुम्हें सितार सिखाया है।

माला : तुमसे यह सब किसने कहा!

रीता : तुम्हारी शादी के समय ही सुना था। पर सबके कहने पर भी तुमने सितार नहीं बजाया। साल-भर हो गये तुमने सितार खोलकर भी नहीं देखा।

माला : रीता, पहले बहुत शौक था। पर धीरे-धीरे बात मन से उतर गयी।

रीता : भइया कहते थे कि तुम बहुत अच्छा सितार बजाती हो।

माला : नहीं रीता, थोड़ा टूँग-टाँग करती थी। अब सब कुछ भूल गयी हूँ।

रीता : सुन्दर जी शहर में आये हैं। तुम उनसे मिलने नहीं गयीं?

माला : क्या कहूँ, बड़ा सिर दुख रहा था। नहीं जा सकी।

रीता : भाभी, थोड़ी देर पहले कोई आया था। तुमसे बात कर रहा था।

माला : तुम्हारे भइया के मित्र आये थे। पूछ पाछ कर चले गये। यह आकाशवाणी है। हम अपने श्रोताओं के लिए क्लब-ग्राउंड से विशेष संगीत कार्यक्रम रिले कर रहे हैं। अभी पंडित सुन्दर राज सितार पर यमन कल्याण प्रस्तुत कर रहे थे। **(रेडियो पर घोषणा)** अब वे एक दूसरी रचना राग बागेश्वरी में प्रस्तुत करेंगे।

रीता : पंडित सुन्दर राज! कैसा सुखद आश्चर्य है! रेडियो थोड़ा तेज़ कर दूँ, भाभी!

माला : नहीं रीता, इस समय कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। बंद कर दो रेडियो!

रीता : लेकिन भाभी!

माला : ये आवाज़ें हर समय मेरा पीछा करती रहती हैं। इन आवाज़ों के बीच एक दिन मेरा दम घुट जाएगा।

रीता : भाभी, यह क्या कह रही हो!

माला : भीतर शोर, बाहर शोर! एक आदमी एक समय कितना शोर झेल सकता है।

रीता : भाभी! मैं रेडियो बंद कर देती हूँ। तुम आराम करो।

[रीता रेडियो बंद कर देती है। कालबेल की आवाज़]

रीता : लगता है, भइया आ गये। मैं खाना गरम करती हूँ। तुम लोग जल्दी आओ।

माला : तुम चलो, मैं आती हूँ।

[दरवाज़ा खोलने की आवाज़]

माला : बहुत जल्दी आ गये।

मनोज : कुछ जरूरी काम था। सुनो माला, ड्राइंग रूम से एक पलँग लगवाना होगा। एक सेट गद्दा, तकिया और ओढ़ने के लिए शॉल। घर में धुली चादर है न?

माला : हाँ, सब कुछ है।

मनोज : चलो ठीक है। देखो रीता से कह दो कि एक-दो सब्जियाँ और बना ले। थोड़े पापड़ भी तल ले।

माला : लेकिन मनोज, आ कौन रहा है।

मनोज : एक बहुत बड़ा मेहमान! तुम्हारे लिए एक सुखद आश्चर्य!

माला : तुम तो पहेलियाँ बुझा रहे हो।

मनोज : तो सुन ही लो। पंडित सुन्दर राज हमारे अतिथि बनकर आ रहे हैं। पूरे तीन दिन ठहरेंगे।

माला : पंडित सुन्दर! यह क्या कह रहे हो!

मनोज : क्लब ने पंडित सुन्दर के लिए एक हॉटल में प्रबन्ध किया था। पर सुंदर जी होटल में जाने के लिए तैयार नहीं हुए। बोले—मनोज जी होटल के माहौल में मेरी कला घुट जाएगी। अपने ही घर के कोने में एक पलंग डलवा दीजिये।

माला : और तुमने मंजूर कर लिया।

मनोज : मेरे लिए यह गौरव की बात थी। क्लब के सभी लोग मेरे सौभाग्य से ईर्ष्या कर रहे थे।

माला : लेकिन यह नहीं हो सकता।

मनोज : सुन्दर राज एक महान सितार वादक हैं—एक अंतरराष्ट्रीय स्तर के कलाकार हैं। उनके आतिथ्य पर तुम्हें क्या आपत्ति हो सकती है।

माला : मैं तर्क नहीं करना चाहती। पर तुम जो कुछ तय कर आये हो वह नहीं होगा।

मनोज : सुन्दर राज तुम्हारा संगीत-गुरु रहा है। तुम्हें इस प्रबन्ध पर प्रसन्नता होनी चाहिए।

माला : बहुत से संबंध समय बदल जाने पर अपना अर्थ खो देते हैं। फिर उन्हें ढोया नहीं जा सकता।

मनोज : क्लब के सभी लोगों के सामने इस बात की चर्चा हुई है। सब

लोग क्या कहेंगे।

माला : मनोज, जो नहीं हो सकता उसके बारे में सोचना बेकार है।

मनोज : अजीब जिद है। मैं चाहता था कि फंक्शन में तुम्हारा भी सितार बजे पर तुम इनकार कर गयीं। तुम तो क्लब जाने के लिए भी तैयार नहीं हुई। अब तुम्हें सुंदर जी के ठहरने पर भी एतराज है—किसी बात की हद होती है।

माला : मेरी तबियत बिलकुल ठीक नहीं है।

मनोज : यह सिर्फ एक तर्क है—औरत का सबसे बड़ा हथियार। पर आज मैं इस दीवार को तोड़कर रहूँगा।

माला : मनोज, मुझ पर विश्वास नहीं करते।

मनोज : इसमें विश्वास-अविश्वास की क्या बात है।

माला : कभी-कभी एक छोटी-सी चिंगारी पूरे घर को जला देती है।

मनोज : तुम्हारी ये रहस्यपूर्ण बातें मेरी समझ में नहीं आतीं। तुम आखिर कहना क्या चाहती हो!

माला : मनोज, सुन्दर को यहाँ मत लाओ।

मनोज : मैं वादा कर चुका हूँ। यह कार्यक्रम अब बदल नहीं सकता।

माला : मनोज, मेरी तबीयत ठीक नहीं है।

मनोज : तब तुम छोड़ दो। रीता सब मैनेज कर लेगी। रीता!

(बुलाता है)

[रीता का प्रवेश]

रीता : क्या है, भइया?

मनोज : रीता, हमारे यहाँ एक मेहमान आ रहे हैं। पंडित सुन्दर राज को जानती हो।

रीता : वही जो सितार बजाते हैं।

मनोज : हाँ-हाँ··· वही! वे हमारे यहाँ ठहरने के लिए आ रहे हैं। तीन दिन ठहरेंगे।

रीता : सच भइया! अपना सितार साथ लायेंगे न!

मनोज : अजीब पगली है। कलाकार, यहाँ रहेगा और अपना साज़ कहीं और छोड़ देगा।

रीता : तब तो बड़ा मज़ा आयेगा। मैं अपनी सभी दोस्तों को इनवाइट

करूँगी। सब पंडित सुंदर राज की फैन हैं।

मनोज : अच्छा-अच्छा, यह सब पीछे करना। पहले ड्राइंग रूम में एक पलँग लगवा दो। दो आदमियों के भोजन का भी प्रबन्ध करना होगा।

रीता : ठीक है भइया। मैं सब इंतज़ाम करती हूँ।

मनोज : ठीक है, अब जाता हूँ। घंटे भर बाद आऊँगा।

रीता : ठीक है, भइया। में किचेन में जा रही हूँ।

[रीता का प्रस्थान]

मनोज : माला, मैं जा रहा हूँ। रीता सब कुछ कर लेगी। तुम्हें किसी तरह की तकलीफ नहीं होगी।

माला : मनोज, तुम इस प्रोग्राम को ड्रॉप नहीं कर सकते?

मनोज : तुम्हें समझाना बहुत मुश्किल है। जो कुछ कहना हो साफ-साफ कहो।

माला : सब कुछ साफ-साफ कहूँगी। एक लड़की की कहानी सुनोगे?

मनोज : मेरे पास बहुत कम समय है। लोग क्लब में मेरा इंतजार कर रहे होंगे।

माला : मेरे पास भी अधिक शब्द नहीं हैं। मनोज, यह किस्सा आज से पाँच-छह वर्ष पहले शुरू होता है। एक लड़की थी, करीब सोलह-सत्रह साल की। यही रीता की उम्र समझो। शहर के एक मशहूर डॉक्टर की बेटी, रूप और यौवन से भरपूर। उसके लिए जिन्दगी एक खूबसूरत सपनों की घाटी थी, जहाँ सतरंगे झरने झरते थे। वहाँ अनगिनत गुलाबों का बाग था।

मनोज : मैं इस कहानी में एक शब्द जोड़ दूँ—उस लड़की का नाम माला था।

माला : चलो, यही सही। तो माला ने एक दिन फरमाइश की कि सितार सीखूँगी। पिता ने दूसरे ही दिन एक सितार-शिक्षक को दरवाज़े पर खड़ा कर दिया। घुँघराले बाल, खूबसूरत मासूम-सा चेहरा, कोमल लड़कियों जैसे हाथ—कहीं सितार-शिक्षक ऐसा होता है।

मनोज : मैं एक शब्द और जोड़ दूँ—उस संगीत शिक्षक का नाम सुन्दर

राज था।

माला : हाँ, उसका यही नाम था। सुन्दर ने माला को सितार सिखाना शुरू किया। लेकिन साथ ही जिन्दगी का सबसे खूबसूरत और खतरनाक खेल शुरू हो गया।

(संगीत-वादन)

दूसरा दृश्य

[**स्थान :** माला के पिता का बंगला। **समय :** संध्या 7 बजे।]

(माला के सितार पर राग विहाग का टुकड़ा)

[सुन्दर का प्रवेश]

सुन्दर : वाह! इसे कहते हैं, राग विहाग। एक-एक स्वर साफ-साफ।

माला : आइये सुन्दर जी, आप तो बहुत इंतजार कराते हैं।

सुन्दर : इसीलिए तुम्हारा राग खूब जमा था। विहाग के सुरों में एक तरफ विषाद है तो दूसरी तरफ मिलन की ललक।

माला : आप तो कविता गढ़ने लगे।
आपको कवि होना चाहिए था।

सुन्दर : हरेक कलाकार को कवि बनना ही पड़ता है। निर्जीव स्वरों में मानवीय भावनाओं का स्पर्श जरूरी है।

माला : कुछ लोगों में भावना होती ही नहीं, जैसे मैं।

सुन्दर : माला, तुम तो मात्र भावना हो। सौंदर्य और प्रेम की दहकती हुई आग। तुम्हें तो देखने से ही आँच लगती है।

माला : यह आपकी दूसरी कविता है। अगर मैं आग होती तो यह लकड़ी का सितार सुलग उठता।

सुन्दर : तुम्हारे छूने से यह सितार सचमुच सुलगने लगता है। सितार ही नहीं, स्वरों का ताप भी बढ़ जाता है।

माला : तब तो सुनने वाले भी झुलस जाते होंगे?

सुन्दर : हाँ, बिलकुल यही बात है।

माला : (हँसती है) वाह ! सुन्दर जी, आपने पूरा रूपक रच दिया।

सुन्दर : माला, मेरी तरफ देखो! तुमसे मिलने के पहले मैं क्या था। और अब क्या हो गया हूँ।

माला : अजीब बात है। मैं क्या जानू कि मुझसे मिलने के पहले आप क्या थे।

सुन्दर : तुमने मुझमें कोई फर्क नहीं देखा?

माला : बिलकुल नहीं। जबसे आपको देखा है, आप वैसे ही हैं—वैसे ही नाजुक, वैसे ही शर्मीले।

सुन्दर : माला!

माला : आप ही ने कहा कि मैं आग हूँ। जंगल के एक कोने की आग बुझाने के लिए दूसरे कोने में आग लगायी जाती है।

सुन्दर : मेरे पास शब्द नहीं हैं।

माला : सिर्फ सुरों से काम नहीं चलता। कभी-कभी शब्दों की भी जरूरत होती है।

सुन्दर : माला!

[डॉ. वर्मा का प्रवेश]

डॉ. वर्मा : हलो, सुन्दर जी!

सुन्दर : आइये डॉक्टर साहब!

डॉ. वर्मा : कहिये सुन्दर जी, आपकी स्टूडेंट कैसी है?

सुन्दर : बहुत अच्छी, बहुत टैलेंटेड।

डॉ. वर्मा : यह सब कह कर आप इसे फुला देंगे। देखो माला, आज खाना कम खाना।

माला : कम खाऊँगी डैडी। आज कल मैं जोर-शोर से स्लिमिंग कर रही हूँ। **(सब हँसते हैं।)**

सुन्दर : मेरे पास बहुत से स्टूडेंट हैं पर इतनी प्रतिभा किसी में नहीं है।

डॉ. वर्मा : इसमें प्रतिभा तो है पर लड़की सुरियल है। कभी हँसने लगती है तो दिन-भर हँसती रहती है। कभी रोने लगती है तो गंगा-जमुना में बाढ़ आ जाती है।

माला : नो-नो डैडी!

डॉ. वर्मा : कभी सितार का सुर चढ़ता है तो दिन-भर टूँग-टाँग करती

रहती है।

माला : झूठ मत बोलो, डैडी! तुम मेरा सितार कहाँ सुनते हो।

डॉ. वर्मा : तुम्हारे हाथ मे सितार हो तो सुनने की समस्या नहीं होती। समस्या यह होती है कि कैसे न सुना जाय। कभी-कभी कान बंद करना पड़ता है।

माला : डैडी, तुम जानबूझ कर मुझको डाउन कर रहे हो। मैं इतना खराब थोड़े ही बजाती हूँ।

डॉ. वर्मा : मैं खराब कहाँ कह रहा हूँ। सुन्दर जी जैसे शिक्षक हों तो तुम खराब क्यों बजाओगी।

माला : तुम्हारे लिए तो बस सुन्दर जी हैं। मैं कितना मेहनत करती हूँ।

डॉ. वर्मा : एक कहानी के अनुसार किसी ने एक जिन्न पाला। जिन्न को हर समय काम चाहिए। जब काम की कमी हुई तो मालिक ने जिन्न को एक खंभे पर चढ़ने-उतरने को कह दिया।

माला : डैडी, तुम्हारी बात समझ में नहीं आयी।

डॉ. वर्मा : मैंने इस कहानी को थोड़ा बदल दिया है। मेरे पास एक भूतनी थी। मैंने उसके हाथ में एक सितार दे दिया है।

माला : जाओ डैडी, मैं तुमसे नहीं बोलूँगी।

डॉ. वर्मा : तब तो और मुश्किल होगी। तुम्हारे पेट में हजारों बातें हैं। उनका क्या होगा? **(सब हँसते हैं।)**

डॉ. वर्मा : देखिये सुन्दर जी, इस लड़की में टैलेंट है। इसमें एनर्जी भी है। सिर्फ थोड़े लगन की जरूरत है।

सुन्दर : डॉक्टर साहब, इसमें लगन भी है।

डॉ. वर्मा : आप बहुत बड़े सितार वादक हैं। अगर आप थोड़ी मेहनत कर दें तो यह लड़की आर्टिस्ट हो जाएगी।

सुन्दर : मैं पूरी कोशिश कर रहा हूँ। बस आप थोड़ी सुविधा दें।

डॉ. वर्मा : मेरी तरफ से हर तरह की मदद है।

सुन्दर : देखिये दिल्ली में कलाकारों की एक प्रतियोगिता हो रही है। अगर आप माला को जाने दें तो उसमें नया आत्मविश्वास पैदा होगा।

डॉ. वर्मा : सवाल है कि माला क्या चाहती है।

माला : आप परमिशन दें तो जरूर जाऊँगी। सुंदर जी कई दिन से कह रहे हैं।

डॉ. वर्मा : तो ठीक है। हो सकता है कि मुझे समय न मिले। तब यह काम आपको करना होगा।

सुन्दर : ठीक है, डॉ. साहब। मुझे आपसे ऐसी ही उम्मीद थी।

(संगीत वादन)

तीसरा दृश्य

(पहले दृश्य की पुनरावृति)

माला : उस प्रतियोगिता में मुझे पहला पुरस्कार मिला। इस घटना ने डैडी को बहुत प्रभावित किया। फिर मुझे हर तरह की छूट मिल गयी। मैं सुन्दर के साथ अनेक शहरों में प्रोग्राम देने लगी।

मनोज : मैंने तुम्हें ऐसे ही एक कार्यक्रम में देखा था। तुम्हारी और सुन्दर जी की जुगलबंदी थी। मैंने भी तालियाँ बजाई थीं।

माला : हाँ, हमारी जुगलबंदी बहुत लोकप्रिय हो गयी थी। वह सिर्फ साजों का संगीत नहीं था। वह दो प्रेमियों का संवाद था। वह बादल और बिजली की आँखमिचौनी थी। लोग सुनते और सुध-बुध भूल जाते।

मनोज : उसके बाद!

माला : हम भी धीरे-धीरे सुध-बुध भूल गये। मुझे लगा कि सुन्दर सृष्टि का पहला पुरुष है और मैं सृष्टि की पहली नारी। हमारे पास सुरों के पंख थे। हमने सभी सितारों को अपनी मुट्ठी में बाँध लिया था।

मनोज : तुम्हारे पास साहस की कमी नहीं थी।

माला : हाँ, उसी साहस का दुस्साहस के कारण आज तुमसे यह सब

कह पा रही हूँ।

मनोज : चलो, आगे कहो।

माला : उसके बाद एक गहरा धमाका हुआ और एक खूबसूरत संसार खंड-खंड होकर ढह गया।

(संगीत-वादन)

चौथा दृश्य

[**स्थान :** मैरिन ड्राइव, मुम्बई का एक होटल **समय :** संध्या 6 बजे।]

(समुद्र की लहरों की हल्की आवाज़)

माला : सुन्दर, समुद्र की लहरों में भी एक सुर होता है। उसे साज़ में नहीं बाँधा जा सकता।

सुन्दर : जरूर बाँधा जा सकता है। जब सितार के सुरों में तुम्हारे जैसी लड़की बँध गयी है तो समुद्र को बाँधना क्या मुश्किल है।

माला : तुम तो हँसी करते हो!

सुन्दर : यह हँसी नहीं है, माला। मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि तुम्हें इस तरह पाऊँगा।

माला : यह सब मेरे पूर्व जन्म के पुण्यों का फल था। लगता है कि एक अदनी-सी चिड़िया ने हाथ बढ़ाकर चाँद को पकड़ लिया है।

सुन्दर : लेकिन भविष्य में क्या होगा। कभी-कभी सोचकर डर लगता है।

माला : नहीं, मुझे डर नहीं लगता। संगीत के सुरों ने हमें एक सूत्र में बाँध दिया है। यह बंधन अब नहीं टूट सकता।

सुन्दर : लेकिन माला··· अरे यह क्या··· डॉ. वर्मा चले आ रहे हैं। तुमने उन्हें बुलाया था?

माला : नहीं, मैंने तो उन्हें एक महीने से पत्र नहीं लिखा है।

[डॉ. वर्मा का प्रवेश]

माला : डैडी, आप यहाँ!

डॉ. वर्मा : हाँ माला, मैंने तुम्हें ढूँढ़ लिया है। तुम्हारे डैडी की आँखें अभी दूर तक देख सकती हैं।

सुन्दर : डॉ. वर्मा।

डॉ. वर्मा : मिस्टर सुन्दर, कानून के हाथ बहुत लम्बे होते हें। उसकी पकड़ बहुत मजबूत होती है।

माला : डैडी लगता है कि तुम्हें कुछ मिसअंडरस्टैंडिंग हो गयी है।

डॉ. वर्मा : नहीं-नहीं, जो मिसअंडरस्टैंडिंग थी वह अब दूर हो गयी है। अब सब कुछ साफ हो गया है।

माला : लेकिन डैडी।

डॉ. वर्मा : मेरे पास बहस के लिए समय नहीं है। गेट अप गर्ल ऐंड वी गो!

माला : लेकिन डैडी, अगले सप्ताह हमारा म्यूज़िक प्रोग्राम है।

सुन्दर : हाँ डॉ. वर्मा, उसका विज्ञापन भी हो चुका है।

डॉ. वर्मा : शट अप यू रैस्कल!

माला : डैडी!

डॉ. वर्मा : अब कोई प्रोग्राम-वोग्राम नहीं होगा। आई से यू गेट आप ऐंड वी गो।

माला : डैडी, जो कुछ हुआ है मेरी मर्जी से हुआ है। इसमें सुन्दर का दोष नहीं है।

डॉ. वर्मा : माला, डौंट टीच मी! मैंने यह दुनिया तुमसे बहुत अधिक देखी है।

माला : डैडी, तुमने मुझे बहुत छूट दी है। एक छूट और दो। मैंने अपनी मर्जी से सुन्दर का वरण किया है।

डॉ. वर्मा : डोंट टॉक नानसेंस!

माला : डैडी, ईश्वर की यही मर्जी थी। हमने एक-दूसरे को स्वीकार किया है।

डॉ. वर्मा : यह असंभव है। मैं तुम्हारा सर्टिफिकेट ले आया हूँ। यू आर ए माइनर!

माला : मैं कानून की बात नहीं कर रही हूँ। कुछ बातें कानून से परे होती हैं। एक मन का समर्पण होता है।

डॉ. वर्मा : मैं यहाँ कविता नहीं सुनने आया हूँ।

माला : डैडी, तुम तो जात-पाँत नहीं मानते। तुम्हें इस संबंध में क्या आपत्ति है।

डॉ. वर्मा : तुम इस कमीने की बात करती हो! मैंने इससे बड़ा धूर्त नहीं देखा।

माला : डैडी, सुन्दर जी एक महान कलाकार हैं। वे थोड़े सम्मान के हक़दार हैं।

डॉ. वर्मा : यह तुम्हारे लिए सम्मानीय होगा। मैं इसकी असलियत देख चुका हूँ।

सुन्दर : मेरी असलियत!

डॉ. वर्मा : हाँ, माला की तलाश में मैं तुम्हारे घर भी गया था। वहाँ मैं तेरी मरियल बीवी और कीड़ों से बिलबिलाते बच्चों को देख आया हूँ।

माला : डैडी!

डॉ. वर्मा : सब कुछ अपनी आँखों से देखा है। सब इसके नाम झख रहे हैं।

माला : सुन्दर!

डॉ. वर्मा : बोलिये मिस्टर, क्या यह सब सच नहीं है।

सुन्दर : वह एक बचपन का रिश्ता था। कई वर्ष हो गये। उस परिवार से संबंध बिलकुल टूट गया है।

डॉ. वर्मा : यह भी झूठ है। तूने उन्हें बराबर रुपये भेजे हैं।

सुन्दर : आप मुझे गलत समझ रहे हैं।

माला : सुन्दर, यह सब क्या है। तुमने इन बातों का कभी जिक्र नहीं किया।

सुन्दर : माला, वह विवाह नहीं, गुड्डे-गुड्डी की शादी थी। पाँच साल का लड़का, तीन साल की लड़की।

डॉ. वर्मा : चलो माला, अब तो तुमने सब सुन लिया।

सुन्दर : डॉ. वर्मा, माला मेरी पत्नी है।

डॉ. वर्मा : खबरदार, जो यह शब्द मुँह से निकाला। माला की इज्जत का सवाल है, नहीं तो तुम्हें हथकड़ियाँ लगवा देता।

सुन्दर : डॉ. वर्मा, मुझे भी कुछ कहना है।

डॉ. वर्मा : शट अप! चलो माला!

माला : डैडी, मुझे थोड़ा सोचने दीजिये।

डॉ. वर्मा : सोचने के लिए सारी उम्र पड़ी है। जल्दी करो, नीचे टैक्सी खड़ी है।

माला : डैडी!

डॉ. वर्मा : चलो माला!

[डॉ. वर्मा और माला का प्रस्थान]

(संगीत वादन)

पाँचवाँ दृश्य

(पहले दृश्य की पुनरावृत्ति)

मनोज : और उसके बाद।

माला : मैं डैडी के साथ चली आई पर मेरे व्यक्तित्व का एक अंश सुन्दर के साथ छूट गया। मुझे लगा कि एक भयानक तूफान मुझे रौंद कर आगे बढ़ गया है। एक मूर्ति टूट कर बिखर गयी है। मुझे सुन्दर से शिकायत थी कि उसने अपने विवाह की बात मुझसे नहीं कही। कैसी है उसकी पत्नी! कहाँ है उसके बच्चे। उनके प्रति सुन्दर की क्या जिम्मेदारी है। उसे मुझसे सब कुछ कहना चाहिए था।

एक दिन सुन्दर की चिट्ठी आई। पता नहीं उसमें क्या लिखा था। मैं पूरी चिट्ठी नहीं पढ़ सकी। सारी चिट्ठी आँसुओं में धुल गयी।

मैंने उसके पत्र का उत्तर नहीं दिया। उसका कारण मेरी नाराज़गी नहीं थी। मैं सुन्दर से नाराज नहीं हो सकती थी। यह मेरे बूते की बात नहीं थी।

मैंने एक दिन सितार बजाने की कोशिश की, पर नहीं बजा सकी। सितार के हरेक सुर से सुन्दर! सुन्दर! की

आवाज़ निकल रही थी। मैंने सितार उठाकर रख दिया।

सुन्दर के कितने ही पत्र आये। वह मुझे खोकर बहुत दुखी था। मुझे लगता था कि एक उजला हँस अपनी टोली से बिछुड़ कर रास्ता भूल गया है। बादल घिरते आ रहे हैं और वह पक्षी उदास भटक रहा है।

डैडी ने मेरे विवाह की बहुत कोशिश की। अनेक प्रस्ताव आये। कितने ही प्रलोभन दिये गये। पर मैंने सबको न कह दिया। सुन्दर से अलग किसी भविष्य की कल्पना भी मेरे लिए असंभव थी।

इसी बीच कई साल बीत गये। सुन्दर की शोहरत धीरे-धीरे फैलती गयी। देश-विदेश में उसकी माँग बढ़ती जा रही थी। एक दिन मैंने एक बहुत भयानक बात सुनी। मैंने सुना कि सुन्दर बेहद शराब पीने लगा है। लोग उसके चरित्र की भी आलोचना भी कर रहे थे।

मेरे होश उड़ गये! मुझ पर कड़े प्रतिबन्ध थे। पर मैं किसी तरह बम्बई गई। जो कुछ हुआ वह जिन्दगी का दूसरा धमाका था।

(संगीत वादन)

छठा दृश्य

[स्थान : मुम्बई का एक उपनगर। **समय :** संध्या 6 बजे।]

(कॉल बेल की आवाज़। सुन्दर दरवाज़ा खोलता है)

(दरवाज़ा खुलने पर पश्चिमी धुन का कैसेट सुनाई पड़ता है।)

माला : सुन्दर, मैं हूँ, माला!

सुन्दर : **(थोड़ा नशे में)** माला, तुम हो!

माला : तुम्हें बहुत ढूँढ़ना पड़ा। कितनी देर से चक्कर लगा रही हूँ।

सुन्दर : अच्छा, मुझे अब भी ढूँढ़ती हो।

माला : देखो, तुम्हारे सामने खड़ी हूँ।

सुन्दर : चलो, अन्दर चलो।

(दो कदम चलने की आवाज़ संगीत बंद होता है।)

सुन्दर : इनसे मिलो। ये हैं मेरी स्टूडेंटस। मिस जूली और मिस लीज़ा। दोनों विदेश से आई हैं।

जूली : नमस्कार!

लीज़ा : नमस्कार!

माला : नमस्कार।

जूली : आपकी तारीफ़!

सुन्दर : अरे हाँ, ये माला है। माई ओल्ड स्टूडेंट।

लीज़ा : **(धीरे से)** ऐंड स्वीटहार्ट!

(दोनों लड़कियाँ हँसती हैं।)

माला : आप विदेश से सितार सीखने आई हैं?

जूली : ओ येस! सितार ऐंड योगा!

लीज़ा : **(धीरे से)** ऐंड इंडियन लव।

(दोनों हँस पड़ती हैं।)

सुन्दर : माला, ये दोनों लड़कियाँ बहुत मेहनत से सीख रही हैं।

जूली : अबी तो शुरू किया।

माला : तुम्हारे जैसा शिक्षक हो तो सब कुछ सीख लेंगी।

(लीज़ा शराब की बोतल ओर प्याले लाती है।)

लीज़ा : मिस माला, हैव ए ड्रिंक।

माला : मैं शराब नहीं पीती।

लीज़ा : कुछ नहीं होता। पहले मिस्टर सुन्दर नहीं पीते थे। नाऊ ही ड्रिंकस् लाइक ए फिश!

माला : मेरे लिए संभव नहीं है।

जूली : तुम मिस्टर सुन्दर का ओल्ड स्टूडेंट!

लीज़ा : **(धीरे से)** ऐंड स्वीटहार्ट।

जूली : हम तुम्हारे वेलकम में सेलीब्रेट करता।

सुन्दर : थोड़ा-सा ले लो, माला!

माला : तुम कहते हो सुन्दर! मुझे बहुत आश्चर्य हो रहा है।

सुन्दर : अच्छा, रख दो। लीज़ा कीप इट।

जूली : मिस माला, मिस्टर सुन्दर सितार पर ब्यूटीफुल पॉप म्यूजिक बजाता।

माला : पॉप म्यूजिक।

जूली : येस, ब्यूटीफुल पॉप म्यूजिक।

माला : हो सकता है।

जूली : मिस्टर सुन्दर इज़ ए ग्रेट आर्टिस्ट!

लीज़ा : (धीरे से) ऐंड ए ग्रेट लवर!

(दोनों लड़कियाँ हँसती हैं।)

माला : सुन्दर!

सुन्दर : क्या है, माला।

माला : मैं तुमसे कुछ बात करना चाहती हूँ।

सुन्दर : यहाँ नहीं कह सकतीं!

माला : बिलकुल नहीं।

सुन्दर : खैर चलो, बाहर चलो!

लीज़ा : ओल्ड लव, वेरी ओल्ड लव!

(दोनों लड़कियाँ हँसती हैं।)

(सुन्दर और माला बाहर जाते हैं।)

माला : मैं तुमसे एक सवाल पूछना चाहती हूँ। आखिर यह सब क्या है!

सुन्दर : किसके बारे में पूछ रही हो।

माला : इतनी शराब पी रहे हो।

सुन्दर : बड़ी मस्ती है इसमें। नयी-नयी कल्पनाएँ उभरती है।

माला : ये लड़कियाँ कौन हैं?

सुन्दर : मेरी स्टूडेंटस हैं। बहुत अच्छी हैं।

माला : मुझे ठगने की कोशिश मत करो।

सुन्दर : मैं खुद ठगा गया हूँ। मैं किसको ठग सकता हूँ।

माला : तुम अपने को बर्बाद कर रहे हो। तुम्हारी कला मर जाएगी।

सुन्दर : यह झूठ है। मेरी कला की सब तारीफ करते हैं।

माला : यह कारोबार कितने दिन चलेगा।

सुन्दर : सब कुछ ठीक है। मैं इस लाइफ़ को खूब एनज्वाय कर रहा हूँ।

माला : सुन्दर!

सुन्दर : तुम कहना क्या चाहती हो!

माला : मैं कुछ कहना नहीं चाहती।

सुन्दर : एक दास्तान मर गयी है। एक सुन्दर की क्रूरता-पूर्वक हत्या कर दी गयी है। इसे अब ढूँढ़ना बेकार है।

माला : अच्छा, अब जा रही हूँ।

सुन्दर : तुमने मेरी चिट्ठियों का जवाब नहीं दिया?

माला : हाँ, नहीं दे सकी। पर उससे क्या फर्क पड़ता है।

सुन्दर : हाँ, अब कोई फर्क नहीं पड़ता।

माला : अच्छा, अब जाती हूँ।

सुन्दर : जा रही हो। अच्छा जाओ।

(माला जाती है।)

जूली : तुम्हारा स्टूडेंट चला गया सुन्दर?

लीज़ा : ओल्ड लव इज़ ओल्ड लव। न्यू लव इज़ न्यू लव।

(दोनों हँसती हैं)

[पश्चिमी संगीत की एक लहर तैर जाती है।]

(संगीत वादन)

सातवाँ दृश्य

(पहले दृश्य की पुनरावृत्ति)

मनोज : इसके बाद।

माला : इस घटना ने मुझे बिलकुल तोड़ दिया। एक दर्द-भरी दास्तान सचमुच मर गयी थी। एक अतीत टूट कर बिखर गया था। उसके बीच सुन्दर को खोजना असंभव था।

इसके बाद तुम आये! तुम कम बोले। अधिक सवाल नहीं पूछा अधिक नहीं माँगा। मैंने तुम्हें पसन्द कर लिया।

मैं पूरे मन से नये घर को जोड़ने में लग गयी। मैं अतीत को

भुला देना चाहती थी। पर अतीत जैसे कुंडली मार कर सीने पर बैठा हुआ था। मेरे अन्दर एक दोहरे अपराध की भावना पल रही थी।

मनोज : दोहरा अपराध!

माला : पहला अपराध तुम्हारे प्रति था। मुझे बराबर लगता कि मुझे तुमसे सब कुछ कह देना चाहिए।

मनोज : और दूसरा अपराध?

माला : वह सुन्दर के प्रति था।

मनोज : सुन्दर के प्रति?

माला : पूरी बात सुन लो, मनोज। फिर निर्णय दे देना।

मनोज : अच्छा कहो।

माला : औरत को अपने पहले प्यार के प्रति बहुत ममता होती है। मुझे लगता था कि सुन्दर की हालत के लिए मैं ही जिम्मेदार हूँ।

मनोज : यह तो अपने नजरिये की बात है।

माला : जानते हो मनोज, करीब एक घंटा पहले सुन्दर मुझसे यही सब कह गया है।

मनोज : सुन्दर यहाँ आया था?

माला : हाँ मनोज, तुम्हारे क्लब जाने के बाद सुन्दर यहाँ आया था। ओफ वह कितना कड़वा संवाद था!

(संगीत वादन)

आठवाँ दृश्य

[स्थान : मनोज का बंगला। **समय :** रात्रि 7 बजे।]

(कॉल बेल की आवाज़)

(माला दरवाज़ा खोलती है।)

माला : तुम सुन्दर!

सुन्दर : हाँ, मैं ही हूँ, माला। पहचानती हो न!

माला : तुम्हें नहीं पहचानूँगी!

सुन्दर : पता नहीं। फंक्शन तय होने पर तुम्हें पत्र डाला था। नतीजा यह हुआ कि तुम क्लब भी नहीं आयीं।

माला : मेरी तबीयत ठीक नहीं थी। कहो, कैसे आये?

सुन्दर : शहर में आया था। सोचा कि तुमसे मिल लूँ।

माला : फंक्शन में अकेले आये हो?

सुन्दर : क्या मतलब!

माला : तुम्हारी पॉप आर्टिस्ट नहीं आयीं? वह रंभा-संभा का पेयर।

सुन्दर : तुम शायद उन फारेन लड़कियों की बात कर रही हो! वे वापस चली गयीं।

माला : उसके बाद दूसरी लड़कियाँ आयी होंगी।

सुन्दर : तुम कहना क्या चाहती हो?

माला : तुम कहो। तुम क्या कहने आये हो?

सुन्दर : माला जो कुछ हुआ है उसके लिए तुम जिम्मेदार हो। सिर्फ तुम... मैंने तुम्हें भुलाने के लिए ही पीना शुरू किया था।

माला : फिर मुझे भूलने के लिए आधे दर्जन लड़कियों की जरूरत पड़ी! क्यों!

सुन्दर : माला!

माला : यह शाही-अंदाज छोड़ दो सुन्दर! तुम देवदास नहीं हो। कभी नहीं बन सकोगे।

सुन्दर : माला, मुझे एक मौका और दो। मैं फिर से जिन्दगी शुरू करना चाहता हूँ।

माला : तो इसमें क्या दिक्कत है?

सुन्दर : माला, तुम मेरे साथ चलो। समझो कि एक बच्चा राह भूल गया था। तुम्हारे बिना मैं आज भी भटक रहा हूँ।

माला : यह सब क्या कह रहे हो!

सुन्दर : मनोज तुम्हारे अभाव को सह लेगा। वह तुम्हें एक दिन भूल जाएगा। माला, हम तुम एक-दूसरे के लिए बने हैं। तुम्हारे बिना मैं हमेशा अधूरा रहूँगा।

माला : सुन्दर, होश में बातें करो।

सुन्दर : चलो माला, हम विदेश चलें। मेरे पास धन है, यश है, कला है। तुम्हारे पास प्रेम है, सौन्दर्य है। मेरा यश तुम्हारी रक्षा करेगा। तुम्हारा प्रेम मेरी कला को रूप और गंध देगा।

माला : नहीं सुन्दर, यह बिलकुल असंभव है।

सुन्दर : लेकिन क्यों?

माला : हमारे-तुम्हारे बीच एक अतीत था। वह अब मर चुका है। उसे अब किसी तरह लौटाया नहीं जा सकता।

सुन्दर : वह अतीत मरा नहीं है, माला। वह हमारे बीच हर क्षण सांस ले रहा है।

माला : सुन्दर, मैं किसी की पत्नी हूँ। मैं उनके प्रति वफादार रहना चाहती हूँ।

सुन्दर : माला, सिर्फ मंत्रों से मन नहीं बँधता। एक मन का सच भी होता है। उसके सामने झूठ नहीं बोला जा सकता।

माला : सुन्दर, मुझे तर्कों में मत उलझाओ। मैंने बहुत मेहनत से इस घर को जोड़ा है। मैं इन दीवारों को धोखा नहीं दे सकती।

सुन्दर : इन दीवारों के बाहर भी एक संसार है। एक खुला हुआ आकाश है।

माला : मेरे लिए नहीं है। मेरा मन बहुत दुर्बल है। मेरे पंख बहुत कमजोर हैं। मैं अब इतनी लम्बी उड़ान नहीं भर सकती।

सुन्दर : माला, अभी समय है, सोच लो। मैं इस शहर में अभी तीन दिन हूँ।

माला : बहुत सोच चुकी हूँ। इस विषय पर कोई भी चर्चा अब बिलकुल बेकार है।

सुन्दर : माला, मुझे एक मौका और दो।

माला : जाओ सुन्दर, मनोज किसी भी समय आ सकता है। मैं इन दीवारों में दरार पड़ने नहीं दूँगी।

(संगीत वादन)

नौवाँ दृश्य

(पहले दृश्य की पुनरावृत्ति)

माला : इस तरह यह कहानी खत्म हो गई।

मनोज : माला, अगर तुम सुन्दर के पास लौटना चाहती हो तो मैं तुम्हें मुक्त कर दूँगा।

माला : मनोज, यह क्या कह रहे हो।

मनोज : जिन्दगी-भर कुंठाओं से लड़ने की अपेक्षा एक कड़वा अलगाव कहीं अच्छा है।

माला : नहीं मनोज, सुन्दर मेरे जीवन से जा चुका है। उसे अब नहीं लौटाया जा सकता।

मनोज : लेकिन क्यों!

माला : मैंने जिसे प्यार किया था वह भोला कलाकार अब मर चुका है। वह एक दूसरा सुन्दर है। यह मुझे धन और यश से खरीदना चाहता है।

मनोज : माला, अच्छी तरह सोच लो।

माला : अच्छी तरह सोच लिया है। मनोज नदी की धारा आगे बढ़ चुकी है। वह वापस नहीं लौट सकती।

(टेलीफोन की घंटी। मनोज फोन उठाता है।)

मनोज : हलो-हलो··· कौन सुन्दर जी··· मैं मनोज बोल रहा हूँ। सॉरी सुन्दर जी, पत्नी की तबीयत ठीक नहीं है··· आज क्लब नहीं आ सकूँगा··· और सुन्दर जी इस बार घर पर व्यवस्था नहीं कर सकूँगा··· यू सी वाइफ़ इज़ इल्ल··· होप यू डोंट माइंड इट।

(टेलीफोन रख देता है।)

माला : मनोज !

मनोज : कुछ और कहना है।

माला : नहीं, मैंने सब कुछ कह दिया है। और ये हैं, सुन्दर की चिट्ठियाँ। जो भी सजा दोगे, सिर-माथे पर रखूँगी।

मनोज : चलो माला, खाना खा लो।

माला : कुछ कहो मनोज, क्या सोच रहे हो।

मनोज : माला, इन चिट्ठियों को आग में डाल दो। मैंने तुम्हारा और सुन्दर का किस्सा सुना था। पर मुझे तुम्हारे संतुलन में विश्वास था। मुझे खुशी है कि तुमने मेरे विश्वास का सम्मान किया है।

माला : मनोज!

(संगीत वादन)

□□